विज्ञापन ।

इस किताबकि छपानेमें वा संसोधन करनेमें कोई तरहका हरफ लगमात्र का भूल हुवा होय तो मुजे मिछामीं दुकड होय वा सज्जन पुर्ष सुद्ध माञा कारके मणानेमें ल्यावे भूल चूक दुसरी आवृत्तीमें सुद्ध की जायगी पाठक भूल चूक पर तरक न करे ।

इस किताबमें सहायता देनेवाले महासयोंकि नाम । बाबू

तेजपालजी वृधीचन्दजी सुराणा मु० चूरू ।

रुकमानन्दजी उदैचन्दजी सुराणा मु० चूरू ।

भीकमचन्दजी चोरड़िया मु० सरदार सहर

बुद्दमलजी मींचा मु० सरदार सहर ।

भीकमचन्दजी छाजेड मु० सरदारसहर

जोरावरमल्ल बयद मु० रतनगढ़

THE INDIAN ART SCHOOL, CALCUTTA

॥ श्री ॥

॥ श्रीजिनेश्वरदेवाय नमः ॥

अथश्री चौवीस जिन सत्वन ॥ राग० कैसे जीउ मेरी ज्यान सजन विन कैसे जीउरे ॥ एदेशी० ॥ कुण तारे भवपारजी जिनंद विन कुण तारे भवपार ॥ एआं० ॥ ऋषभ अजित संभव भजोरे ॥ अभिनंदन सुविलास ॥ सुमति पदम सुपास जोरे ॥ चंद रंग्यां शिववास ॥ जिनन्द ॥ १ ॥ सुबुद्धि शीतल श्रीयांशजीरे ॥ वास पुज्य भगवंत ॥ विमल अनन्त धर्म सांत जीरे ॥ प्रणमत भवको अन्त ॥ जिनन्द० ॥ २ ॥ कुंथु अरी मल्ली तणोरे ॥ समर्या है सुखकार ॥ मुनिसो व्रत जिनराज कैरे ॥ चरणांको आधार ॥ जिनन्द० ॥ ३ ॥ नमीनाथ एकवीस

मांरे ॥ प्रभु मोटा जगदेव ॥ दुःख दोह्ग दूरे टलैरे ॥ ज्यो सारै तुमसेव ॥ जिनन्द० ॥ ४ ॥ नेमीनाथ बावीसमारे ॥ यतुल बली अरिहंत ॥ राजुलदेको छाड़ केरे ॥ शिव वधुवेग बरन्त ॥ जिनन्द० ॥ ५ ॥ पार्श्वनाथ इद्व मांज जीरे ॥ सर्व जिनन्द चोवीस ॥ भजन करो भवि जीवडा रे ॥ तो शिव विसवा बीस ॥ जिनन्द० ॥ ६ ॥ सम्बत उगणीसै छासठैरे ॥ वैसाख सुदी बुधवार ॥ जोरावर एकम तिथिरे ॥ प्रणमत बारंबार जिनन्द० ॥ ७ ॥ इति० ।

अथवीस बहरमान सत्वन ॥ राग० ॥ कंथ तमाखु छोड़ दे ॥ मुखड़ा मैं आवै बासजी ॥ आलीजा तमाखु छोड़ दे ॥ एदेशी० प्रात उठो भजिये भवि ॥ प्रभु बहरमान जिन बीसजी ॥ प्रा० एआं० ॥ श्री सीमंद्र साहिबा । दुजा युगमन्द्र देवजी ॥

भाग्य वली नर जेहके। ते सारे नित प्रत सेवजो ॥ प्रा० ॥ १ ॥ बाहु सुबाहु गुण नीला। सुजात जगतनो ईसजो ॥ स्वयं प्रभु मोटा महि। जिण जीत्या रागनेरी सजो ॥ प्रा० ॥२॥ ऋषभानन्द आनन्दकर। अनन्त वीर्य गुणखानजो ॥ सूर प्रभु सेव्यां-थकां। कोइ पामे पद निरवाणजो ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ वीशाल प्रभु वैरागीया। बजरधर बज्र समानजो ॥ घातो कर्मांने खयकरो। प्रभु पाम्यां केवल ज्ञानजो ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ चंद्रा नन्दजी बारमां। चन्द्र बाहु रह्यां सुखकार जो ॥ भुजंग प्रभु भय मेटिया। जिण वरी शिव सुन्दर नारजो ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ ईश्वरजी जगदीश्वरू। श्रीनेमीश्वर जिनराय जो ॥ वीरसेन महाभद्रजो। ज्यांरा लुल २ पूजो पायजो ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ देव जश दीवाकरु उद्योत करण संसारजो ॥ अजित वीर्य जिन

बीसमां । ज्यांने वांदुं बार हजारजी ॥ प्रा०
॥७॥ एह बीस वहरमान साश्वता । जघन
पदे अवधारजी ॥ उत्कृष्टा शत साठही ।
वीचरै महा विदेह मंभारजी ॥ प्रा० ॥ ८ ॥
प्रभु चौतीस अतिशय दीपती ॥ कोईवांणी
गुण पैंतीसजी ॥ फिटक सिंहासन वैसणो ।
आप जीवांना जगदीसजी ॥ प्रा० ॥ ९ ॥
प्रभुलख चौरासी पुरवां आयु परमाण वि-
चारजी ॥ सहुनो आयु एकसो । नहीं कोइ
फेर लिगारजी ॥ प्रा० ॥ १० ॥ पभु महा
विदेहमें वस रह्या । हुं वसुं भर्थ खेत मंभा-
रजी ॥ आवन सक्त महारी नहीं । थांरो
नाम जपुं जयकारजी ॥ प्रा० ११ ॥ जोरा-
वरकी वीनती । थे मांनो प्राण धारजी ॥
मुजमन भाव जाणी रह्या ॥ प्रभु ज्ञानतणे
अनुसारजी ॥ प्रा० १२ ॥ उगणीसैं पैंसठ
समैं । कांई पोष शुक्ल पक्षसारजी ॥ नवमी

तिथ गुरुवारनै गुण गावत हर्ष अपारजी ॥ ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति० ।

अथ ऋषभ जिन स्तवन ॥ राग० ॥ साहेब कैसैं करुं तोय राजी ॥ एहहरजसकी चालमें ॥ देशी० ॥

ऋषभ जिन कैसैं करुं तोयराजी ॥ पांचु चोर करे कुफराना मोह बड़ो है पाजी ॥ ऋष० एआं० नाभिके नन्दन जगतके वंदन तुमकों कैसें पाउं ॥ कर्मोंके संग फिरुं भटकतो भव भव गोता खाउं ॥ ऋष०॥१॥ में चेतन अनाथ प्रभुजी ॥ कर्म कुबुद्धि अति भारी ॥ तिणसें फिर कुगुरां भरमायो ॥ भूल गयो सुधसारी ॥ ऋष० ॥ २ ॥ अब कछु पुन्य अंकूर प्रगट भयो ॥ साचा सत्त गुरुपाया मुज ऊपर कृपा हदकीनी ॥ तोरा स्वरूप बतलाया ॥ ऋष० ॥ ३ ॥ एह संसार असार जिनुंमें ॥ तुज समर्ण सुखकारी ॥ एही धार तुज

रटना लगाई ॥ निसदिन सांझ सवारी ॥ ऋष० ॥ ४ ॥ जोरावर भज आद जिनन्द पद ॥ तन मन अति हुलसाई ॥ भजन करे बिन पार न पावे ॥ या सत्त गुरु फरमाई ॥ ऋष० ॥ ५ ॥

अथ श्री बर्द्धमान जिन स्तवन ॥ राग० सोरठी ॥ एरी जसोदा तोसैं लरंगी लराई ॥ एदेशी० ॥

एरी जिनन्दा तोसे अर्ज हमारी । तुज स्मरण करूं ऊठ सवारी । एरी० एआं० राय सिद्धार्थघर अवतारी ॥ टसला देजी तुज महेलारी ॥ एरी० ॥ १ ॥ जन्म महोत्सव सुरपति आरी ॥ मंगल गावत दीसाजी कूंवारी ॥ एरी० ॥ २ ॥ बहुविध वृद्धि थई तिवारी । वर्द्ध मांन तब नाम दियारी ॥ एरी० ॥ ३ ॥ कर अंगुष्ट करिमेर कंप्यारी ॥ म्हावीर जब नाम भयारी ॥ एरी० ॥ ४ ॥ जग सुख जहरसमा परिछारी ॥ वैरागधर संयम व्रतधारी ॥ एरी०

॥ ५ ॥ बहु बिध तपकर कर्म खपारी ॥ध्यान धरी केवल उपजारी ॥ एरी० ॥ ६ ॥ दिस विदिसांमें कियो बहु उपगारी ॥ गोतमादिक एकादश गणधारी ॥ एरी० ॥ ७ ॥ चउदै संहस मुनिश्वर तारी ॥ आर्यांतणी छतीस हजारी ॥ एरी० ॥ ८ ॥ कामदेव आद श्रावक विचारी ॥ एक लच्छ गुण सठ संहस उद्धारी ॥ एरी० ॥ ९ ॥ तिरलच्छ सहंस अष्टा दश सारी ॥ रेवती आद श्राविका तारी ॥ एरी० ॥ १० ॥ लाखांको डां सुलभबोधि कीयारी । श्रेणकादिक दृढ़ समकित धारी ॥ एरी० ॥ ११ ॥ कोणक भक्त भयो तुज भारी ॥ तेह नो आप कियो निस्तारी ॥ एरी० ॥१२ ॥ तुमताखा ज्यांरो पारन पारी । पिण अब आई हम तणी वारी ॥ एरी० १३ ॥ प्रगट करण तुम समर्थ धारी ॥यह ऋद्धि करूं भेट तुमारी ॥एरी०१४

युग सावन बद एकम सारी ॥ जीरायर प्रभुके गुणगारी ॥ एरी० ॥ १५ ॥ इति० ॥

अथश्री भिक्षणजी स्वामीके गुणांको स-स्वन ॥ प्रभु जाय चढ़े गिरनारीरे। वोने छाड़ि है राजुल नारी। सुणी पशु पुकारी दया चित धारी। वारी ममताकों मारी बीसारी ॥ एदेशी० ॥ प्रभु भिक्षु भये अवतारीरे। इण पंचम आरे मंझारी ॥ बहु जीव उद्धारी किया भवपारी। ज्यांरो सरण सदा सुखकारी ॥ एआं० गणि सुत्र सिद्धांत के भेद भिनो भिन ॥ खोल किया निस्तारी ॥ अन्य मत्तकों छोड दीना। प्रभु सुद्ध थया अणगारी ॥ प्रभु सुद्ध थया अणगारीरे ॥ इण० ॥ १ ॥ गणि देश विदेश विचर भविताखा। सुलभ किया नरनारी ॥ जड मुढने सीधाकीना। ज्यांरी भिंतर खोड निवारी ॥ ज्यांरी०

दूण० ॥ २ ॥ पाखंड भेख बध्या बहुतेरा। ज्यांनै चरंचासुं जीत विडारी ॥ सुद्व मार्ग प्रगट कीना। प्रभु वीरवचन उरधारी ॥ प्रभु० दूण० ॥३॥ दोय अनुकंपके भेद बताया। दया दानको कियो विचारी॥ सावज्ज निरवद्य का छाण कीना। कियो ज्ञान भान उजियारी ॥ कियो० दूण० ॥ ४ ॥ चरमजिनंदनो सांसन दिपायो। गणि किया घणा उपगारी ॥ बहु प्रबंधबांध दीना। प्रभु च्यार तीर्थ हितकारी ॥ प्र० दूण० ॥ ५ ॥ जोरावर गुण गाय यथार्थ। प्रण मतवार हजारी। तुज चरण सरणामें लीना। थयो आनंद हर्ष अपारी ॥ थयो० दूण० ॥ ६ ॥ सम्वत उगणीसे पैंसठ बरसे पौष शुक्ल पच्चसारी ॥ गुण गाय खुसीभया सीना। जाउं बार बार बलिहारी ॥ जाउं० दूण० ॥ ७ ॥ इति०

अथ श्री डालचंदजी महाराजके गुणांकी ढाल१ पहली० राग ॥ मल्हार० तथा पीलु तथा ठुमरी तीन चाल में० ॥

डाल गणि मैंतो दर्श तिहारो ॥ पेखत प्रगट्यो हर्ष अपारो ॥ डाल० एषां० निस दिन लाग रही मुज मनमें ॥ कब देखूं प्रभुके दीदारो ॥ डाल० ॥ १ ॥ अन्तराय कर्म कछु दूर भये जब ॥ आन मिल्यो अवसर दर्शणांरो ॥ डाल० ॥ २ ॥ धन्य घड़ी धन्य भाग्य हमारो ॥ भेट्योमें नन्द कन्हीयाको प्यारो ॥ डाल० ॥ ३ ॥ चरण कमल फरसित हियो हर्षित ॥ तन मन विकस रह्यो अति म्हांरो ॥ डाल० ॥ ४ ॥ मैं पापी तुम तारन हारो ॥ भवसायर थी पार उतारो ॥ डाल० ॥ ५ ॥ तुम हो दीनानाथ जगतके ॥ असरणको सरणागत थांरो ॥ डाल० ॥ ६ ॥ तुम सम तारक नांही जगतमें ॥

मुजकर चढ़ीयो रब हजारी ॥ डाल० ॥ ७ ॥
जोरावर भज डालचन्द पद ॥ लुल २
ध्यावत सांझ संवारो ॥ डाल० ॥ ८ ॥ उग-
णी सैं छासठ शुभ सम्वत ॥ अक्षय तृतीया
दिन आनन्द अपारो ॥ डाल०॥ ६ इति० ॥

अथ ढाल२ दूसरी० राग थीयेटर की०

पल पल तन मन धनवारो ॥ एचाल में० ॥
पल २ नित समरन धारो २ ॥ प्रान प्यारो
डाल तिहारो ॥ दर्शनवाके परसन वासें
मनवा मगन भयो ॥ तन मन विकसित
सारो ॥ पल० एआं० भिक्षु गणिंदको पाट
सातमों डाल दीपा वनझारो॥ मात जड़ाव
कनइयाको नन्दन ॥ लागत मुजकुं प्यारो ।
पल० ॥१॥ च्यार तीर्थं नित करता दर्शन ॥
पेखत तुम दीदारो ॥ अमृत वैन सुणी
भविजन बहु सफल गिणे अवतारो ॥ पल०
॥ २ ॥ पारसकी संगत करवे सुं लोह

कंचन हुवै सारो ॥ तुम संगत शिव सुख कुं पावै ॥ दुःखसें हो छुटकारो । पल०॥३॥ पोत प्रसंगे सागर मांही ॥ पहुंचै पहूले पारो ॥ भव सागर बिच जहाज समां तुम। पार उतारन हारो । पल० ॥४॥ कल्पवृक्ष सम आशा पूरण। चिंत्या चुर्ण मंदारो । तुज गुण ज्यो तन मन सुं गावे। कर देवो खेवो पारो। पल० ॥ ५ ॥ अभय दान जीवों कों आपो। तुम सम कौन दातारो ॥ जोरावर पर मेहर करिनें। द्यो शिवपद सुखकारो । पल० ॥ ६ ॥ पैंसठ पौष शुक्ल तिथि द्वितीया। कलकत्ता सहर मंझारी। श्रीगुरुदेव तणां गुणगाया । प्रगट्यो आनन्द अपारो। पल० ॥ ७ ॥ इति० ।

अथ ढाल३ तीसरी राग० जवाडूकै भांगकै गीतकी बचनारो बांध्यो ढोलोकद्योय न माने ॥ पदेशी० बांन्दोरे सुन्यानी जीवड़ा

डाल गणि वान्दो ॥ बन्दत प्रम आनंद लो ॥ भेटत शिव सुख कंद लो ॥ सुख जिम पूनमचंद लो ॥ श्रैसोरे उपगारी स्वामी डाल गणि वान्दो ॥ भविजनको प्यारो मुनि-वर डाल गणि वांदो ॥ एश्रां ॥ चाद जिनंद ज्युं भिक्षु अधिक उजागर ॥ पंञ्चम आरे मंझार लो ॥ धर्म प्रगट कियो बहु भवि-तारा ॥ जिन सांसण उजियार रो ॥वांदो॥ ॥ १ ॥ तसपट सप्तमें डाल मुनिंदा ॥ च्यार तीर्थ आधारलो । दर्श पियारो ज्यांरो जे कोइ पावे ॥ पुन्य प्रबल तसुआर लो ॥ वांदो ॥ ॥ २ ॥ समो सरण विच जिनवर सोहै ॥ भविमन मोहै अपार लो ॥ जिम इण आरे आप जिनवर जेहवा ॥ ज्ञानसीरोमण सार लो ॥ वांदो ॥ ३ ॥ सभा सुधर्मी इन्द्र दिपावे ॥ जिम जिन सांसण आंयलो ॥ भिक्षु गणिंदरो तखत दिपावो ॥ थांरो दिन

दिन तेज सवाय लो ॥ बांदो० ॥ ४ ॥ सुर नर मुनि थांरो दर्शन चावै ॥ ध्यान धरै सुभ कारलो । दीनदयाल गोवाल कृपानिधि भविजिव तारण हारलो ॥ बांदो ॥ ५ ॥ प्रात उठीने थांरो समर्ण करसी ॥ तेलइसे भवपार लो ॥ दुःख संकट ज्यांरै कदेयन थासी ॥ आवा गमन निवार लो ॥बांदो०॥ ॥६॥ सम्बत उगणीसै छासठ बर्षे ॥ श्रावण धुरपच्छ सारलो ॥ पंचमी तिथ जोरावर थां सुं बिनवै बार हजार लो ॥बांदो०।७।इति०

अथ ढाल४ चौथी ॥ राग० हरजस को०

राम नाम रस पीजे पीजे पीजेरे पीजे रस पीजे ॥ एचालमें० डाल नाम रट लीजे लीजे लीजेरे लीजे रस पीजे ॥ थांरो बंछित कार्य सीझे २ सीझेरे सीझे रस पीजे ।एआ० निंदा बिकथा आलस तजके ॥ नरभव लाहो लीजे २ लीजेरे लीजे रस पीजे ॥

डाल० ॥१॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म कुमारग ॥ प्रबल हीन नही दीजे २ दीजेरे दीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ २ ॥ डाल गुरुकी संगत करके ॥ प्रभु चरचा नित कीजे २ कीजेरे कीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ ३ ॥ ऐसा गुरु पडि लाभ हाथसें ॥ सकल मनोरथ सीजेर सीजेरे सीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ ४ ॥ ऐसा गुरुकी देसन सुणके । ज्ञान सुद्धा रस्त पीजे २ पीजेरे पीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ ॥५॥ एह संसार असार जाणकर ॥ सुकृत करणी कीजें २ कीजेरे कीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ ६ ॥ जोरावर सुगुरु सेव्यां थी ॥ प्रभ प्रमातम रीजे २ रीजेरे रीजे रस पीजे ॥ डाल ॥ ७ ॥ इति० ।

अथ ढाल ५ पांचमी० राग० कजरीकी० भोला छाय रहे काशीमें गिरज्यां पारवती की संग ॥ एदेशी० ॥ तुम ध्यावोरे सुज्ञानी ॥

नित उठ नंद नंदके नंद। नंद नंद आनंद कंद घर ॥ जन्म लियो सुखकंद ॥ तुम० ॥एआं०॥ सहर उज्जेणी देश मालवो। ओश बंस छांजंद ॥ तुम० ॥१॥ पीपाडांके कुलमें गणिवर ॥ पायो नाम जबरंद ॥ तुम० ॥ २ ॥ अनुक्रमें थया वर्ष चतुर्दश। छोड़ दिया गृह फंद ॥ तुम० ॥ ३ ॥ बहु सुत्र सिद्धान्त सीख गणि ॥ देश २ बिचरंद ॥ तुम० ॥ ४ ॥ चोपन माघ बदी द्वितिया दिन। गणिपद हद पावंद ॥ तुम० ॥ ५ ॥ सर्व संतोंमें सोभ रह्या है। जिम उडुगणमें चंद ॥ तुम ॥६॥ धीर वीर वाणीं ज्युं क्षीर ॥ गणि गहरा जेम समंद ॥ तुम० ॥ ७ ॥ हुवा कलु कालमें जिनवर जेहवा। तप रह्यो तेज दिनन्द ॥ तुम० ॥ ८ ॥ मुलक २ में डंको वाज रह्यो। पाखण्ड पड गयामंद ॥ तुम० ॥ ९ ॥ दूर दूरके आवे जातरी। दर्शनकों जन वृन्द।

॥ तुम० ॥ १० ॥ तुज बदन कमल दीदार पेख ॥ भवि रोमराय हुलसंद ॥ तुम० ११॥ जोरावर तोरा गुण गावै। हुलस २ पय-बंद ॥ तुम० ॥ १२ ॥ द्वितीया सावन बद एकम दिन। लाडणुं सहर अमंद ॥ तुम० ॥ १३ ॥ इति०।

अथ ढाल ६ छठी राग० माढ० तोरे दांतकी बतीसी ढोला ऐसी प्यारी लागै ॥ तोरी आंख रसीली ढोला सुरमों प्यारी लागैजी। छल बलिया ढोला आन जगाई वैरी नींदमैं ॥ लस करीया ढोला ॥ परदेशाँ०॥

यश धारी गणपत थांराजी चरणांमें म्हारो जीवजी। बस रह्यो नित, प्रतही। कान्ह नंदनजी सुं लागी म्हारी प्रीतजी॥ एचां०॥ तोरे सांसनकी छबिभारी। नीकी प्यारी लागै॥ तोरी मुद्रा मोहनी स्वामी। मुजनै प्यारी लागैजी॥ यश०॥ १॥ अधम

उद्धारन नाथ निरंजन। भव भंजन भग-
वंत॥ पाखंड गंजन। भवि मन रंजन॥
जिन मग सांचे महंतजी॥ यश०॥ २॥
षट्दश षोपम ओपै गणपत। उत्तराधेन
मंझार॥ बेपरकार छतीस गुणाधर॥ सुव
आवश्यक सारजी॥ यश०॥ ३॥ मेरु सो
धीर सयंभु सो गंभीर। तन तावनकौं सूर॥
ज्ञान उज्जास प्रगट कियो जब। भागगयो
अघ भूरजी॥ यश०॥ ४॥ षट् खंड ज्युं
षट् मत्त भणी तुम। साझ लिया अरिखंत॥
शील अखंडित पालतागणि। नव निद्धि
आठ सोहंतजी॥ यश०॥ ५॥ दूषा कलु
कालमें तुं धणीजी। तुं देवन पति देव॥
चिन्ता चूरन आशा पूरन। मैं करता तुम
सेवजी॥ यश०॥ ६॥ छासठ सावन युग
बदी पांचम। लाडयुं सहर सवाय॥ जोरा-
वर तोरा गुण गावै॥ लुल लुल शीश

सुणायजी ॥ यश० ॥ ७ ॥ ॥ इति० ।

अथ ढाल ७ सातमी० राग० विहाग०

चंदा प्रभु भेटत भव दुःख जावै ॥ एदेशी०

प्रभु तोरा च्यार तीर्थ गुण गावै । थांरै सुख साता नित चावै ॥ प्र० एआं० ॥ श्री भिक्षुके सप्तम पाटे । डाल जनेंद्रसा सु-हावै ॥ कहां लग करूं ओपमा वरणन । सुर गुरू पार न पावै ॥ प्र० ॥१ ॥ दोय वर्ष थया सरीरकारण पिण । दिन २ अधिक लखावै ॥ निरबल पणो फुन सोफ इत्या-दिक । अन्नकी रुच नहीं थावै ॥ प्र० ॥२ ॥ कारण करि वेदन बहु तोपिण । स्वकर कार्य करावै ॥ सूरवीर साहासीक पणोप्रभु । खातर मैं नहीं ल्यावै ॥ प्र० ॥ ३ ॥ सन्त कुमार चक्रीथया चौथा । सुत्रा मांहि बतावै ॥ जेहनी परे प्रभु वेद न खमरह्या । साहसपो दरसावै ॥ प्र० ॥ ४ ॥ गज सुख माल कुमार

बैरागी ॥ सोमल बैर काढावे । खैरका खीरा धरया शीशपर ॥ खद बद खीर पकावे । प्र० ॥५॥ सोमल पर कछु द्वेस न आण्यों ॥ अपणा कर्म उड़ावे ॥ जेहनी परे पमु सम परिणांमें बेदन सहन करावे । प्रभु तोरा च्यार तीर्थं० ॥ ६ ॥ अरजन माली थयो रुषेश्वर । भिच्या अवसर जावे ॥ घणा लोक देखीनै त्यांनै । बहु बिध कष्ट उपजावे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ पिण मुनि राग द्वेस नहीं कियापर ॥ अपणांही संच्या हटावे । तेह नी परे प्रभु पंचम आरैमें ॥ चौथो आरो बरतावे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ चरम जिनंद सह्या कष्ट घणेरा । सम चितनै सम भावे ॥ तेह जिसा आप भर्थक्षेत्रमें । दूजो को न लखावे ॥ प्र० ॥९॥ बहु बेदन तोही च्यार तीर्थंनै। भिन २ सीख दिरावै ॥ अमृत धारा बचन श्रवण सुण । सर्व भगन होय ज्यावे ॥ प्र० ॥

॥ १० ॥ महा विदेह सम क्षेतर लाड़णुं। ऐसा पुर्ष उद्धरावे ॥ धन्य घड़ी धन्य भाग्य जेहनो। स्वाम दर्शन नित पावे ॥ प्र० ॥ ॥ ११ ॥ कोड दीवाली तपो स्वामजी। एह अविलाष करावै ॥ जोरावर प्रणिपत जर थांरा ॥ हर्ष २ यश गावै ॥ प्र० ॥१२॥ संवत छासठ द्वितीया सावन सुद ॥ चौथ शुक्र कहिवावे ॥ सभा वीच गुण वरणन करके। वार २ वलिजावे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ इति०।

अथ ढाल ८ आठमी राग हरिवसमें मेरी सहीयोए। आज म्हांरो लालन आवे लोए ॥ एदेशी० सहर अजेणी दीपतो। जात पीपाडा सार ॥ लाल कन्हीयाको लाडलो। जडांवां कूल उजार ॥ म्हांरा ग्यानी गुरूजी वो थांरे। सुख साता अब थाव ज्यो ॥ म्हांरो मन हुलसावे। म्हांरो तन विकसावे म्हांरो उमग न मावे ॥ म्हांरा पुज वड़भागी

वो थांरै ॥ सुख साता अज थाव ज्यो ॥१॥
एम्हां० ॥ मुनिपट भिक्षुके छजै ॥ डालचंद
सुखकार ॥ भर्थ मैं प्रगट्यो भान ज्युं ।
मिथ्या ध्वांत बिडार ॥ म्हां० ॥ २ ॥ सरीर
कारण बहु बिधकारी । खम रह्या दृढ़ता
धार ॥ मंदिर गिर सम स्वामजी । अडिग
भाव अपार ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ बसेष औषध
लेवे नहीं । साहस सीक सिरदार ॥ परवा
नही कोई बातरी । तरण तारण रो विचार
॥ म्हां० ॥ ४ ॥ सूरो पूरष रणनै बिखै ॥
अरियण करै संघार ॥ जिम प्रभु कर्म रीपू
भणी ॥ कापे बिवध प्रकार ॥ म्हां ॥ ५ ॥
देश २ मैं थांहरा । चावै शुभ समीचार ॥
बाट जोवै बहु प्राणीयां । ज्यु चकवी दिन-
कार ॥ म्हां० ॥६॥ हुवे तन द्रु सती आपरै ।
इम चाहै नर नार ॥ च्यार तीर्थमें आनन्द
हुवे । बरतै मंगलाचार ॥ म्हां० ॥७॥ साता

हुवां श्रीपूजरै। होसी जय जयकार॥ एह अविलाषा मांहरी। पूरवसे किरतार॥ ॥ म्हां० ॥ ८ ॥ जोरावरकी वीनती। मानो प्राणां धार॥ सावन सुद नवमी दिनें॥ पमणत हर्ष अपार॥ म्हां० ॥ ६ ॥ इति०

अथ ढाल ६ नवमीं राग० तरकारी लेल्यो मालण आई बीकानेरकी॥ तर० ॥ एदेशी० सरणां भवि लेल्यो डाल मुनिन्द गण वृन्दके। सर० एमां० डाल गणि-न्दके सरणां सेती। पामै भव जल पारो॥ दुःख संकट सबही मिट जावै। होज्यावै निस्तारोरे॥ सर० ॥ १ ॥ स्वाम भिक्षणको पाट सातमों। डाल दिपा बनहारी॥ अथँ वेचरसें सिंह जिम गुंजै। साहस जिन अनु हारोरे ॥ सर० ॥ २ ॥ शशी सम शीतल वदन तिहारो। तेजस्वी दिनकारो॥ भव भय भंजन जन मन रंजन। शिव मगके

दातारोरे ॥ सर० ॥३॥ शील रूप रथ सझ्यो सजीलो । तीन गुप्ति असवारो ॥ ध्यान रूपी ये गजकर घूमै । बुद्धि तुरंग विचारोरे ॥ सर० ॥४॥ पंच महाव्रत सुभट विकट अति । सैन्या सुयश अपारो ॥ तपकी तोप ज्ञान गोलासें । अन्य मतकों फटकारोरे ॥ सर० ॥ ॥ ५ ॥ सुमति रूप कस कमर कटारी । त्रण्यां खड्ग करधारो ॥ जयना रूकी ढाल ढकणथी । आवत कर्म विडारोरे ॥ सर०॥६॥ बहु विध मोह विकट दल ठेलण । पाखंड पेलणहारो ॥ सुत्र सिद्धान्त बचन घन गरजत वाजत जिम जल धारोरे ॥ सर० ॥७॥ जो भवि जन तोरा गुणगासी। देसी पूठ संसारो ॥ कर्म खपावी शिवपद वरसी । करणी खेवो पारोरे ॥८॥ पैंसठ जेठ सुक्ल पक्ष बारस लाडणुं सहर मंझारो। जोरावर तुम चरणां मैं चित ॥ सरणांके आधारोरे ॥ सर० ॥९॥ इति०

अथ ढाल १० दशमीं राग ५ ठेमरकी
अम्मा मुजे अच्छीसी टोपी मंगादे० पदेशी०
स्वामी मोरी नइयाको पार लंघादे पार
लंघादेर मुक्ति तो मोय बकसादे ॥ स्वा० ॥
एभां ॥ चरणों मे लेटुंगा ॥ दुःख दंद मे
टूंगा ॥ वारुंगा तन मन हां हां हां ॥ प्रान
करूं र कुरबान हमहम हम ॥ स्वामी० ॥१॥
राग० दुसरी अमवाकी डाली तले आलीरी
झुलना झुलादे० पदेशी० ॥ मज धारासें
नइया ॥ स्वामीरी पार लंघादे० म० मेरे
पुज्य सेती करत परज ॥ अरजीपे मरजी
करादे० म० एभां० लंघांने वाला तुंहीं है
सिरताज भला ॥ तिहारी मुद्रा मोहनचंद
उजास भला ॥ कब दिखलाते तखत ह-
जारा भला ॥ दर्शप्रीयारे हय तो सबजनकों
लागे भला ॥ प्यारी लासानी है प्यारी
नुरानी है सूरत सोहानी है ॥ तुं मुजपार

तंवारे ॥ म० १ ॥ राग० तीसरी चलती चमला चंचल चाल० एदेशी० मुज लागत प्यारी भारी डाल गर्याँदक्षिव तोरी ॥ सिद्धान्त बचन भल बोलै ॥ बयनन अमृत रस घोलै० । सुण भविमन बहु हर्ष भयोरी ॥ मु० एआं० ॥ जलदी तारो मुज भणी करदे नइया पार ॥ सरण गहेको बांहकों पकर करो भव पार ॥ आहाहा बंइयां मोरी ॥ ओहोहो आप गहोरी ॥ भव बार सेती पार करोरी ॥ सुज० ॥ २ ॥ राग चौथी तोरी छल बल है न्यारी तोरी कलबल है प्यारी ॥ एदेसी० तोरे सासनकी छिबभारी ॥ जैसें खिलरही कैसर क्यारी ॥ थांरा संत सती गुणभारी मोरे स्वाम० एआं० ॥ च्यार तीर्थनित करता दर्शन ॥ दर्शन कर होता परसन मोरे स्वाम ॥ नित जपता है जाप ॥ तोरी धरता है छाप ॥ ज्यांरा काटता है पाप ॥ एजी

बाबाबा- बाबाबा बाबाबा एजी बाबाबा तोरे सांसनकी छिब भारी० ॥ ४ ॥ राग० पांचमी० बटवा गूंदण देरे मोजानीडा० एदेशी० नइया पार लंघादे मोरे पुजजी नइया पार लंघां० ॥ हांरे मोरे प्यारे सुखकारे प्रभुजी मोरी नइया पार लंघा ॥ एआं० जोरावर तोरे दर्शको प्यासो ॥ हर्षर गुण गाय ॥ नित उठ तोरा जपन करत है ॥ तन मनथी लिवलाय ॥ मोरे प्यारे० नइया० ॥ ५ ॥ इति० ।

अथ ढाल ११ एका दशमी० राग० प्रभाती: वा कालींगडो ॥ प्रात उठी श्रीडाल गणिंदको भजन करी भवि भाव धरी ॥ संकट कोट कटे भव संचित ज्यो ध्यावे मन उमंग करी ॥ प्रा० एआं० सहर उज्जेणी देश मालवो ॥ ओश वंश अवतार धरी ॥ मात जड़ावां तात कनीलाल ॥ तास घरे

बहु लील करी ॥ प्रा० ॥ १ ॥ उगणीसै नव कें गणि जन्म्यां ॥ ते वीसै संयम सखरी ॥ चोपन माघ वदी दुतिया दिन ॥ भिचु गणिंदको तख्त वरी ॥ प्रा० ॥ २॥ बहु सुत्र सिद्धान्त विलोकी ॥ काव्य श्लोक अरु छन्द पदरी ॥ ज्ञान घटा घण जन घट घाली ॥ देश विदेश मांहे विचरी ॥ प्रा० ३ ॥ विच-रत २ वर्ष पैंसठें ॥ चौमासो कियो हुलस धरी ॥ चंदेरीमें ठाठ लगायो ॥ वरषायो बहु ज्ञान झरी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ चौमासो उतरीयां विहार करायो ॥ पिण कारण कम सत्ति भरी ॥ विहार कस्यो नहीं गयो स्वाम जब ॥ दुसर चौमासो कियो फरी ॥ प्रा० ॥ ॥ ५ ॥ शरीर निपट गयो छीज दिनोंदिन ॥ अन्नकी रुच पण कमती परी ॥ सूर वीर साहसीक पणे प्रभु ॥ काट्या संचित कर्म अरी ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ च्यार तीर्थने बहु विध

करके सीखामण दीधी जबरी ॥ सर्व जीवोंसें किया खांमणा ॥ बार बार मुखसें उचरी प्रा०॥७॥ भाद्रव शुद बारस संध्याको ॥ प्रतिक्रमण शुध भावकरीं ॥ अठ दश पाप आलोवी स्वामजी ॥ पहुंता गणिवर स्वर्ग सरी ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ इण कलुकालमें एहवो गणिवर दीपायो जिन मार्ग खरी ॥ याद आया तनमन विकसावे ॥ भवि जनके हिय उल्लसरी ॥ प्रा० ॥९॥ जोरावर है दाश आपको ॥ जपन करत पल घरी घरी ॥ उर बिच ध्यान लग्यो गणि तेरो ॥ एरावत ज्युं वन कजरी ॥ प्रा० ॥ १० ॥ छासठ संवत कुंवार शुक्ल पक्ष ॥ परव दशेरो दिन जबरी ॥ हर्षर गणिवर गुण गाया ॥ कलकत्तो है महानगरी ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ इति ।

अथ श्री डालचंदजी म्हाराजके गुणांका समस्या पूरतीका श्लोक ॥ समस्या एह के

डाल गुरू गणिके गुणगायो० ॥ देश विदेश फिस्यो बहुतोपिण ॥ डाल जिसो गुरू कोयन पायो ॥ सांसन नंदन बन्न सो देखके मोमन हर्ष बछोरे सवायो ॥ पुन्य अंकूर प्रगट भयो जब ॥ स्वाम भिक्खनको मारगपायो ॥ स्योपुर सुंदर नार बरन कूं ॥ डाल गुरू गणिके गुण गायो ॥१॥ उदै भयो उदिया चल सो गणि ॥ भिक्षुको मार्ग भलोही दि-पायो ॥ घालत ज्ञानको जोत घनाघट ॥ मिथ्यात् रूप अंधार मिटायो ॥ तारक स्वाम सबे बिध लायक ॥ पेख छटा मुज आनन्द आयो ॥ स्योपुर सुंदर नार बरन कुं डाल गुरू गणिके गुण गायो ॥ २ ॥ इति० ।

अथ श्री जेठांजी महा सतियांजी री ढाल ॥ राग मति जावो प्ररदेश भंवरजी होय रोटी देणां ॥ एह चालमें० ॥ भजो सति जेठांजी भारी ॥ सबं शत्यांमें शोभरह्या

है ज्युं केसर क्यारी ॥ ए आं० ॥ चुरु सहर ओश वंश नीको ॥ जात नाहेटा अधिक दीपता सारां शिर टीको ॥भ०॥१॥ पिता सेवा रामजी सुखकारी ॥ कानाजी री कुच्छ आन कर लीनो अवतारी ॥ भ० ॥ २ ॥ उगणीसे एक संवत धारी ॥ जन्म भयो शुभ घड़ी नच्चत्र ॥ शुभ बेल्यां सारी ॥ भ० ॥ ३ ॥ मात पितु व्याह रचो भारी ॥ सुगन मलजी बेद पति वर पायो सुविचारी ॥ भ० ॥४ ॥ पूरब क्रुत कर्म उदै आई ॥ पति बियोगथयो अति मनमैं ॥ वैराग्य हद लाई ॥ भ० ॥ ॥ ५ ॥ जगत सुख जहर समां जाणी ॥ उगणीसै बीसै दिक्षा लीधी ॥ संवेग चित आणी ॥ भ० ॥६॥ अति मुख निरमल जिमचंदा ॥ जीत गणींको सेवा सारी ॥ तन मन हुलसन्दा ॥ भ० ॥ ७ ॥ जीत गणि परसनचित कीनो ॥ अतियां मांहि अधिक कायदो थांरो

कर दीनो ॥ भ० ॥ ८ ॥ मघवा गणि मांणक यश धारी ॥ तास चाकरी बहु विध कीधी ॥ हित चित लिव लारी ॥ भ० ॥ ६ ॥ डाल गणि गुण संपन जाणी ॥ पवि तरणीको पदवी दीधी ॥ कीधी अधिकाणी ॥ भ०॥१०॥ गणांधिप डाल जवर गूंजै ॥ तास पुरण मरजी थांउपर ॥ प्रवल पुन्य पुंजै ॥ भ० ॥ ११ ॥ सर्व सतियांनै सुमति देवो । माइत पणांकी मरजी करणे ॥ सहु संभाल लेवो ॥ भजो० ॥ १२ ॥ प्रात समर्णां थी कर्म टूटै । सुखड़ो देख्यां पातिक नाठै ॥ दुरगति दुःख छूटै ॥ भजो० ॥ १३ ॥ जोरावर लुल २ शिरनावे । निस दिन ध्यान धरै उर भीतर ॥ मरजी तुम चावै ॥ भजो० ॥१४ ॥ संवत उगणी से छासठ आयो । श्रावन वदि छठ कलकत्ता में गुण तोरा गायो ॥ भजो ॥ ॥ १५ ॥ इति० ।

अथ श्री उपदेशकी ढाल ॥ राग० मोरा जंगामें जोबन लूंटारे२ ॥ लूंटा लुंटा लुंटा ॥ मोरा० एदेशी० जरा जाग जिया क्यूं सो तारे२ ॥ सोता सोता सोता ॥ जरा० एआं० दोय घड़ीको तड़को रह गयो ॥ अहेल जन्म क्यूं खोता ॥ जरा० ॥१ ॥ भव सागर कारागृह सरिखो ॥ कुटम्ब विटम्ब दुःख दोता ॥ जरा० ॥ २ ॥ जोबन लहरी रंग पतंग सम ॥ चपल विजल चम कोता ॥ जरा० ॥ ३ ॥ पुत्र कलत्र घर अरु संपत ॥ सहु अथिर समझोता ॥ जरा० ॥४॥ मोह नींद वस भयोरे दिवानो ॥ निज गुण अम्बु छिपोता ॥ जरा० ॥ ५ ॥ तुज गुण ज्ञान दर्शन चारित्र तप ॥ जिसकुं कांय लकोता । जरा० ॥६॥ कुगुरु वेषधार हृदयमें ॥ जहर बीज क्युं बोता ॥ जरा० ॥ ७ ॥ कुगुरु कु देव प्रसाद चेतानंद ॥ खाय कुगतिमें गोता

॥ जरा० ॥८॥ सुगुरू सुदेव सुधर्म प्रसादे। ज्ञान दीपक घट जोता ॥ जरा० ॥ ६ ॥ जपतप संयम धर सुध करणी ॥ कर्म मेल सहु धोता ॥ जरा० ॥ १० ॥ जोरावर कहै प्रभु भजन बिन ॥ कोई न पार पू गोता ॥ जरा० ॥ ११ ॥ इति० ।

अथ श्री मांणक गणिके गुणांको सत्वन ॥ राग० ॥ छाइ घटा गिगनमैं कारी ॥ राजल कुं ब्रहा दुःखभारी ॥ एदेशी० मांणक गणिराज उद्धारी ॥ में जाउं तुज बलिहारी ॥ एआं० भिन्नु भारी माल ऋषिरायो ॥ जय गणपत कलश चढ़ायो । ज्यांरो दिन२ तेज सवायो ॥ वांसांसण खूब दिपायो ॥ सुयश चिहुं दिश बिच छायो ॥ भविजन मन सुण हर्षायो ॥ झड़० पंचमें मघराज उदारी ॥ ज्यांरी शोम्य प्रकृत सुख कारी ॥ ज्यांनै याद करै नर नारी ॥तोड़०

गणि ऐसा भव तरणा मांय ॥ अर्थरै मांय ॥ पाखंड दियो टारी ॥ मैं० ॥ १ ॥ मघराज तणै पटधारी ॥ माणक गणि जगमें उद्धारी । दीपत जिम तेज दिनारी ॥ सहु आय नमै नर नारी ॥ ज्यांरो पाट दीप रह्यो भारी ॥ ज्यूं खिल रही केसर क्यारी ॥ झड० ज्यांरो तीर्थ जगमें गाजै ॥ नंदन बन ओपमछाजै ॥ रमियां भव दुख सहु भाजै ॥ तोड० गणि राज तीर्थ सुखकार ॥ दर्श दिलधार ॥ तिरै भवपारी ॥ मैं० ॥ २ ॥ षट् त्रस गुणै धर खंता ॥ परिसा बावीस जिपंता ॥ अणा-चार बावन टारंता ॥ शुद्ध अहार पाणी भोगंता ॥ गणि सुत्र अर्थ भाषंता ॥ घनश्चिय बीहै समकित तंता ॥ झड० मुनि आगम नै अनुसारै ॥ गणि बचन वदै सुख कारै ॥ तरता निज पर जन तारै ॥ तोड़० गणि ऐसो है गुण धारी ॥ सुत्त दातारी ॥ भवन

के बारी ॥ मे० ॥ ३ ॥ वर्षे जलधर जिम वाणी वलि गूंजे सिंह समांणी ॥ वाणी रस संवेग पिछांणी ॥ पिवे जन प्रेम प्रमांणी ॥ सुण चातक मन हर्षांणी ॥ केइ संयम ले शुध प्राणी ॥ भड० गणि भवि जीवांने तारे। भवनां दुःख भंजण हारे ॥ करता गणि पर उपगारे ॥ तोड० गणि रतनगढ़ मझधार ॥ कियो उपगार ॥ दर्श दिय भारी ॥ मे० ॥४॥ षट् खंड जेम षट्मत्ता ॥ गणि चक्रि जिम साधंता ॥ क्षम्यां खड्ग धर खंता ॥ गणि नव निधि वाड सोहंता । गणिनां दर्शण पावंता ॥ केइ जग विरला पुन्य वंता ॥ झड० इम गणि गुण अन्तन थाये ॥ किम एक जीभ कहाये ॥ वीरांणो रतनगढ़ मांये ॥ तोड० एह वीनती मंगल कार ॥ अर्ज अवधार ॥ तारो भवपारी ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति० ।

॥ अथःढाल लीष्यते ॥ चाल लावनीकी ॥
॥ भविगणीमुख चंदा ॥ दर्शनकरहरषैनैनच-
कोरजी । भवि० दर्शं०

आदनसु अरिहंत आदजिन सांसनमा
हाहितकार । चरमजिनंद महावीरजीसथां
रोपंथसदासुखसार । सुधर्म जंबुआदपाटो
धर परभवदिकलीयो धार । तिण अनुसारै
इणहीजआरै भिक्षुगुणभंडार । उडावनीः ॥
पाटोधरभारिमालजी । रायरीषीरीधवंत। जैः
मघःमांणकलालपाटवी । डालचंदपुनवंतपंथ
धरवीरजिनंदा ॥ दर्शन ॥ १ ॥ मनोहरमाल
वदेशमैसकांई नगरउजैनी सार । उसवंसक
वडूधकउपतापीपाडाधरप्यार । साहकनई
यालालजीसघरसती जडावांनार । तास
कुक्षअवतारलीयो प्रभुगुणमनीरयणभंडार ।
उ० नौकेसुद आसाढनी । चोथचंद्रसुभवार ।
सुतमुखचंद्र विलोकतांसकांइ । वरत्याजैजै-

कार । धारमनइधककआनंदा । दर्श या० ॥२॥
पतीवियोगजोगलीयो माता । सहीवीसके
साल। दिक्षादिनपटलावर महोछवइं द्रघटाढ्ग
चाल। सतीगोमांजीहाथहरषस्युं आपअच्छा
पुनपाल । तेइस के भादो वदवारस आप
चरणगुणमाल ।उ० उमरवरसदश च्यारकी ।
रक्षावालब्रह्मचार । चरणगांवइं दोर दिक्षा
गुरुहीरालालअणगार । सारसुखसंयमहंदा ।
दर्श या ॥ ३ ॥ इकतीसैकीसालगणा धिपसिं-
घाडोसुखकार । संतचहुं नाथट्ठसुंसकांइक-
रतो भक्तिनिसतार। कच्छगुजरातमेवाडमालवै
विवुधकियोउपगार । चोपनपोषवदीजोधानै
चौथगनीपदधार। उ० दूजमहावदीलाडनुं ।
च्यारतीर्थजिनचंद । भिक्षुतखतवीराजीयास
कांइ। साढसजेमजिनंद । इंदजिमछटादि
पंदा ॥दर्श या॥४॥ षट्दसउपमओपैगनपतउत-
राधैनमंझार । दसमें अंगेतीसकहीचोरासी

अनुयोगद्वार ॥ युग परकार छवीसगुनाधर सुत्रआवस्यकसार। यतिधर्मंदशविधनाधारी सामायंग सुखकार । उ० दोष बयांलीस टालता । बावनटालैअनाचार पांचदोषमां-डलैराटालै । गुनकरग्यानभंडार। घारसंपद अष्टदा ॥ दर्शण ॥ ५ ॥ जिमगजरथबाजी प्यादलकर चक्रवरतदलसूर । तिमगणिनांण चरणतपदर्शन मिथ्यातिम्नकरदूर । क्षमाना ल संतोष जामखोग्यांनगोलाभरपूर। मुगत नगरमर दिया मोरचा अष्टकर्मंदल चूर । उ० सुरत अश्वचढियागणी । सीलटोप सुखदाय । सुमत कामरकस गुप्त कटारी । मारी च्यारकषाय । जाय अगदूर भगंदा ॥ दर्शण ॥ ६ ॥ अहिरावण सांसन मदमाता निसदिनधर्म उद्योत । मनमाहुतवसकीनो-जरनो अंकुसके समजोत । पंचाननजिमगाज मेगुंजेदिनकरतेज सद्योत। अविभयभंजन

नरकनिवारण तारण अवनीपोत । उ०
दादुरजिम हरषितभये । उदैचंद अवदात ।
संतसत्यांगुणमाला गावण । हुकमकरोगनी
नाथ । तातकनिलालके नंदा । दरशण ॥७॥
राम लाल गोविन्द जुहार मल १३
पृथी राज ४ मन रंग ॥ राम सुख ५ गणे-
श पन्ने लाल ७ छबील ८ माता संग ॥
उदै राम ६ सैंजोडै ईश्वर १० आगै नार-
उमंग ॥ क्रोज मल ब्रह्मचारी नवल ॥१२॥
नारी लारै उम्ररंग ॥ उ० राम चंद १३
छजमालजी ॥१४ ॥ जवानमल गुणखान ॥
सिवकरण १६ अभैराज १७ अठारा ॥ पनरै
कुंवाराजाण आण धरजीत मुनिंदा ॥ द० ॥८॥
भजोकजोडीमल १ चांदमल २ अणंदराम
३ चुनीलाल ॥ ४ अमरचन्द ५ गोरीदास
पुनम चंद ६ दुजापन्नालाल ८ ॥ मगन
मल ६ कालुराम १० जेयचंद ११ तीजु-

मातासंगपाल ॥ डायमल १२ मुनि भजो चिरंजी १३ छगनमल १४ गुणमाल ॥ उ० पंचमपट पांचुंदमी मुनिमघवाधरी आण ॥ दोयपरणीज्यावारै कुंवारा॥ एचवदैगुणठाण ॥ जाणलियासहुजगफंदा॥ द०॥९॥ लीलाधर१ मुनिध्यान धरत है दुलीचंद २ दिनकार ॥ दीपचंद ३ मुनिखेमराज ४ सुत साथे संयमधार ॥ भजोभीमजी ५ मातासाथे छोडदियो घरसार ॥ नथराज ६ भगनी शुभ लघिनिजरकंवर निस्तार ॥ उ० साकरचंद ७ कस्तूरजी ८ मांणकहदमुनि आठ ॥ वर-तारामैतेजमाल ९ चरणदेइबिराज्यापाट ॥ ठाठ गणिराजमुनिंदा ॥ द० ॥ १० ॥ कालु राम माता टयासुत ब्रह्मचारी १ सतमाल २ ॥ कल्यानमल ३ नरंजन ४ नथमल ५ विनायक ६ छंगालाल ७ ॥ पन्नालाल ८ पृथाप्रतबोधी जेमल ९ जाणीजाल ॥ फूस-

राज १० दौलतराम ११ जोरजी १२ रुघ-
नाथ १३ रंगलाल १४॥ उ० परतावराम १५
हीरालालजी १६ सागर १७ बक्तमल १८
ख्यात ॥ दुजा चंपालाल १९ ठंडीराम २०
जैनमनोरांसाथं ॥ हाथगणिडाल मुनिंदा ॥
॥ द० ॥ ११ ॥ केसरीमल २१ कनकमल २२
कुन्दण २३ छोगमल २४ रणजीत २५॥ घासी
राम २६ गुलराज २७ संत सतवीस सहु-
सुबनीत ॥ केइकुंवारा केइयकपरण्यां सारां
पूज्यवनीत ॥ शल्यांदोयसै दस मुनि अड सठ
पूज्यआण धरप्रीत ॥ उ० ढालकहुंसतियां
तणी ॥ संप्रतविचरैख्यात ॥ रायऋषिवारा-
सुंलेकर ॥ सप्तमपट अवदात ॥ मातसति
जड़ावनंदा ॥ द० ॥ १२ ॥ प्रथम पवित्रणी
पयप्रणमी ॥ कहुंरायऋषिवार ॥ब्रह्मचारण
कस्तुरां १ जमां २ परणी संजमधार ॥ जीत-
वारै प्रथमचूनांजी १ रायकंवर २ ब्रह्म-

धार॥ भूरांजी ३ सैंजोड सुहागण ॥ दृथी-
चंदसंगधार ॥ उ० जेठांजी ४ जुगतोधरी
सब सतियां सिरमोड ॥ भवदुःख भंजन ॥
५विचित रंजन॥ अरिगंजन अघतोड ॥ मोड
दिया मोहदल फंदा॥द०॥१३॥ तीजां ५सती
सुहागण ब्रह्मण हस्तु ६ उदैकुंवार ७ लछुजी
८ भूमरतांजी ९ भजभुरांजी १० ब्रह्मचार ॥
जडावजी ११ सैं जोडमयाचंद ॥ मखतु १२
रहीकुंवार ॥ चांन्दां १३ सति सुहागणपति
इश्वरजी संयमलार ॥ उं० वीरां १४ जडावां
१५ लछमा १६ टोलां १७ सुतसंगधार ॥
फूलकंवारी १८ चंदणा १९ चिमना २०
चोथां २१ ग्याना २२ सार॥ तारनांनु २३
सुजहंदा० द० ॥ १४ ॥ हरखु २४ कुनणा
२५ रोधु २६ तोजां २७ साकर २८ सुन्दर
२९ सार ॥ सतिसुहागण मांनकंवर ३०
कुसमांजी ३१ सतिकुंवार ॥ कसुरां ३२

चंदा ३३ बिहुंपरणी गंगा ३४ सोरैकुंवार॥ फुलांजी ३६ महादेवां ३७ सुहागण ॥ रायकुंवर ३८ ब्रह्मचार॥ उ० कस्तुरां ३९ इंदोरकी ॥ मोजां ४० जयकुंवार ४१ बरजुजी ४२ ॥ नंदु ४३ छोटांजी ४४ सिरदारां ४५ प्राणा ४६ धार ॥ तारहीरां ४७ गोगंदा ४८ द० ॥ १५ ॥ चंपाजी ४९ बोरावडकेरी कस्तुरां ५० आमेट ॥जडाव ५१ सोरैकांवर ५२ बोरावडतीजां ५३ बकाणीनेट ॥ दुजीऊमां ५४ सतिचोपनमी । जोल वारा लगठेट ॥ हिव मुनिमघराज वारैनी ढाल गायकरु भेट ॥ उ० लीछमांजी १ ब्रह्मचारणी ॥ नांनु २ कुसम ३ राजान ४ नोलां ५ नोल मुनिके लारै॥ लियो चरण गुणखाण ॥ जाणसें जोडदियंदा ॥ द० ॥ १६ ॥ किस्तुरां ६ गोरांजी ७ नोजां ८ सिणगारां ९ मघुजी१० सति जुहारां ११ सुखां १२ भजल्यो ॥ सिण-

गांरां १३ फुनदुजी ॥ अम्मां १४ रुखमां १५
फूलां १६ गोगां १७ कालांजी १८ पै फूजी
१९॥ बालब्रह्म चारणजीतांजी २० रायकंवर
२१ रूपूजी २२ उ० ॥ धन्नां २३ सुतसंगसंयमी
॥ चंदां २४ गुलाब कुंवार २५ ॥ हीरां २६
भजो छोगांजी २७ सुत संग कानकंवर २८
ब्रह्मचार ॥ सार छोगां २९ सुखकंदा ॥ द० ॥
१७ ॥ सिरा ३० सति गंगाजी ३१ सुतसंग
भजल्यो सति जुहार ३२ ॥ भीखां ३३ सति
सुहागण मीरां ३४ तोजीसति सिणगार३५॥
केसरजी ३६ छोगां ३७ बीदासर ॥ सूजांजी
३८ सुखकार ॥ जडावजी ३९ आसांजी
४० तोजां ४१ जीतां ४२ बीजीधार ॥ उ० ॥
पैफां ४३ चानांजी ४४ भजो ॥ सिणगारा
४५ चोथी जाण ॥ पैफां ४६ दुसरी सुगनां
जी ४७ लग ॥ सात चालीस पीछा-
ण ॥ आंण पूरणमल नंदा ॥ द०॥

॥ १८ ॥ मांणकइद प्रथम लिछमांजी १
विरधां २ हस्तु ३ धार ॥ सति सुवटां ४
जड़ाव ५ कांवरां ६ रामकांवर ७ करपार
बरजु ८ सोना ९ सति सुहागण ॥ नांनु
१० निजरकांवार ११ मघु १२ चूना ॥ १३ दुजी
सोना १४ अणाचंग १५ बालां १६ सार ॥ उ०
धन्ना १७ चांना १८ लगनमुं ॥ षष्टमपटदश
आठ ॥ अबकहुं हजुरी ढाल सात्यांनी ॥ मेट
भर्म ओचाट ॥ काट मुज भवके फंदा ॥ द०
१९ ॥ सासु १ बहु २ बेहुं नांव दाखांजी
बहु सुहागण ख्यात ॥ कालुरामजी पतिसें
जोड़े सुत्त सतमल साथ ॥ सति सुहागण
नमुंनाथांजी ३ पृथीराज मुनिहाथ ॥ खेमुंजी
४ चंपा ५ इन्द्रुजी ६ ओशवंश अखियात ॥
उ० रंभो ७ सति सुहागणी ॥ सीरीपालसें
जोड़ ॥ सुताखुमाणा ८ संग कुंवारी ॥ लाड
कुंवर ९ कर कोड ॥ छोड़ दिया सगपण

फंदा ॥ द० ॥ २० ॥ डूमरतां १० सुन्दरजी
११ भूरां १२ सुगना १३ सुगण अपार ॥
दुजी डूमरतां १४ हीरां १५ सुखां १६ हेतु
१७ तखतां १८ तार ॥ पैफांजी १९ सोना
२० सुखदेवां २१ केसर २२ सेरां २३ सोर ॥
रतनांजी २४ चानांजी २५ भतु २६ लाधां
२७ चंपा २८ धार ॥ उ० जमना २९ जल-
जिम निरमली ॥ लिछमांजी ३० मूंमास ॥
दुजीचानां ३१ भेजो हगामां ३२ सति अमे
दां ३३ खास ॥ पास पन्नालाल मुनिंदा
॥ द० ॥ २१ हेमांजी ३४ पन्नाजी ३५ मघां
३६ जीवुजी ३७ जगतार ॥ मोलांजी ३८
एजणजी ३९ भजल्यो ॥ बखतावर ४० सिर-
दार ॥ ४१ भजोहगामां ४२ भूरां ४३ग्यानां
४४ ॥ छोगां ४५ पुलीलार ॥ परतावांजी
४६ भजो सुवटां ४७ राखांजी ४८ दिल-
धार ॥ उ० जडाव ४९ फूलांजी ५० भजो ॥

फुनजडाव ५१ दोनुधार नोजांजी ५३
लाभुजी ५४ दिरयां ५५ दुन्दु ५६ दुजीतार॥
सारगोगां ५७ सुखद्दंदा ॥ द० ॥ २२ ॥ ब-
गसु ५८ सुंगना ५९ हुलासांजी ६० फुन॥
मंगनुं ६१ पुरमेवाड ॥ भूरां ६२ मलाणी ॥
गीगांजी ६३ फुन ॥ भूरां ६४ टाटगढवार॥
पारवतां ६५ जतना ६६ भजचानां ६७ ॥
सोना ६८ वेहुंसंगधार ॥ जडाव ६९ चोथी
मनोहरकांवरी ७० चरणभादूकीलार ॥ ७०
भूरां ७१ चानां ७२ नांनु ७३ तिहुं ॥
साथे संजमभार ॥ हुलासांजी ७४ संगकेसर
कांवरी ७५ अतिबालक हुसियार ॥ धारचर्ण
लियो मुनिंदा ॥ द० ॥ २३ सरदार सहर
की सतिजडावा ७६ रीणासुन्द्र सोभंती
७७ बीदासर कीभतु ७८ सुतासंग मखु ७९
सुखमुलकांती ॥ सिरसांजी ८० दाखांजी
८१ चोथी दुजी ग्यानां ८२ गुणवंती ॥

नांनुजी-८३ पारवतां ८४ वेहुं चरण संग पुनवंती ॥ उ० अजबु ८५ चंपा ८६ तीसरी सति पियारां ८७ सार ॥ हस्त ८८ टाखां ८९ मा जाडू बेनां चरण संग लियो धार ॥ सार संयम सुख कंदा ॥ द० ॥ २४ ॥ राय ऋषि बारानी भजल्यो ॥ सतियां दोय जगीस ॥ जीत बाराना संत चढारा सतियां युग सात बीस ॥ मुनि मघराज आद संत चवधा ॥ सतियां सात चालीस ॥ मांणक हद मुनि नव निद्धि सम ॥ सत्यां तास बिमणीस-उ० वारै हजुरी जांण ज्यो ॥ संत ठाणां सतावीस ॥ सत्यां नव असीधर जुमलै ॥ ढाडूसो नै अठवीस ॥ बीस सात गुणां धरंदा ॥ द० ॥ २५ ॥ चौमासो प्रथम पच-पन को सहर लाडणुं खास ॥ छप्पनको सर-दार सहर ॥ सत्तावन को बीदास ॥ अठाव नो राजाणो जारी आप कियो प्रकास ॥

गुण सठ साल जोधपुर ॥ साठे सुजाणगढ़ सुख वास ॥ उ० इकसठ चूरू फुन लाडणुं वासठ बीजी वार सरदार सहर त्रेसठको ॥ चोसठ बिदासर सुख कार ॥ वार अब म्हांरे मुनिंदा ॥ द० ॥ ॥ २६ ॥ चोसठ माघ सुदी बुधवारी ॥ चोथ लाडणुं न्हाल ॥ वेद उदैचंद जोड़ बणाइ ॥ संत सत्यां गुणमाल ॥ मैं तो म्हांरी जाण मैं सकांइ ॥ अनुक्रमें कही ढाल ॥ आघोपाछो नाम हुवै तो ॥ क्षमा करो दयाल ॥ उ० चोमासैकी अर्ज है ॥ पूरो मनरा कोड राजा थें का आया पुज्यसें अर्ज करे कर जोड ॥ मोड सिरनमण करंदा० ॥ द० ॥ २७ ॥ इति०

अथ श्रीडालचंदजी महाराजके गुणां की ढाल० रागथियेटर की०

हाय सितम गजब हुआ सापुंने मुजको डस लिया ॥ इहांसैं खाये इहांसैं खाये इहांसैं

मुजकों तोड लिया। नीलावदन मेरा हो गया। साधु का जहर चढ़ गया। हाय० एदेशी ॥ स्वांम चर्ण सर्ण तरण ॥ कर्ण भव पार है॥ एआंकडी ॥ भिक्षु पाट सप्तम थाट ॥ गहगाट गुंण माट ॥ मिथ्या छोत खोत धोत ॥ पोत हंस धार है ॥ स्वां० ॥ १ ॥ गुंण छतीस बुध वतीस॥ तजी रीस विश्वा वीस ॥ ज्ञांन खांन मीठीवांन ॥ जिम चीरोद-धार है ॥ स्वां० ॥ २ ॥ अहो तुज सांति दांति चांति क्रांति कीर ज्यु ॥ देखत पेखत परमानंद॥ भविक मन मभार है ॥ स्वां० ॥ ॥ ३ ॥ अघ हटार कर्मविडार ॥ संगत सार तात सम ॥ सोहनी सूरत मोहनी मूरत ॥ इछा पूरत मंदार हैं ॥ स्वां ॥ ४ ॥ गरीब निवाज ताज आज ॥ साज काज दुःख भाज ॥ दीनदयाल तुं ही क्रपाल ॥ अरज निहाल सार हैं ॥ स्वां० ॥ ५ ॥ शिव

वधु बरवा भवदधि तरवा ॥ करवा तन कल्याणको ॥ टुक महर करो भव फेराहरो ॥ तुम चरण सरण जगतार हैं ॥ स्वां० ६ ॥ दीना नाथ साथ आथं ॥ वार२ जोडी हाथ पल २ वंदुं पाप निकंदुं ॥ भेटत तुमदी दार हैं ॥ ७ ॥ स्वाम० ॥ इति दुलीचंदजी साम सुखा क्रत पूज्य गुण वर्णनं समाप्तं ॥

अथ ढाल लीख्यते देसी क्रसन गुजरी का ख्याल की : दान देजा गुजर चंद्रावली मोय दान देजा गुजर चंद्रावली: दान हमारो देजा गुज़री जब जाणे दुं आगे व्रज भोम चौरासी बन मै दान हमारो लागे: दान देजा इण चाल मांही छै०

डालु गणी फुली है गण फुलवारी: गणी तोरी फुली है गण फुलवारी ॥ एआ० श्री भिक्षुके सप्तम पाटे ॥ डालम गणी बन-माली ॥ अहो स्वामी श्री भिक्षुके सप्त-

न पाटे डालम गणी बन माली ॥ नंदन बन समएह गण नीको सदा रहो खुश-याली ॥ गणी ॥ १ ॥ संत भुंड सुर तरुसा सांचा । श्रावक तरु सी कारी २ ॥ चिन्ता वेल असगि है चावि । श्राविका वीसर क्यारी ॥ गणी ॥ २ ॥ दृढ नीर सुख करुणा वारि । सींचत सम कित मूल २ ॥ सीमां श्रोट कोट करणीको । तप संजम है फूल ॥ गणि० ॥ ३ ॥ सिद्धा सूर करत छतीसखरी । कापे कुवद्य त्रण पूर २ ॥ ज्ञान गीलोल गोफणीगेरी । करता बाहर कूर लंगूर ॥ गणि० ॥ ४ ॥ सुयश सुगंध छायो तिहुं लोकि रहे इंद्रादि लोभाइ ॥ अली मन डालु पंकज सेवी । ल्यो फल शिव सुखदाइ ॥ गणि० ॥ ५ ॥ गोर करि नै अरजौ सुणियो जैपुर सहर पधारो ॥ चातग मोर ज्यूं घन जोवै तो चावै नर

भारी ॥ गणि०॥६॥ वेद रितु गृह शशि अरु अदवे सित तपा सप्तमी सारी ॥ सुजाण मल सुरी गुण गाया । लाडणु सहर मंझारी गणि० ॥ ७ ॥ इति०

अथ श्री भिक्षणजी स्वामी के गुणांकी ढाल ॥ श्रावक सोभजी कृत० श्री जिन भाषी सरधा राखी ॥ अरि हंत ज्युं आचारी रे ॥ मिथ्यात कूपीयो मोटा मुनिस्वर मेट दियो अंधकारोरे ॥ कोइ धारोरे २ श्री पुज्य शिक्षो शिर धारोरे ॥ १ ॥ ज्युं कोइ स्हुरो रण मैं जुझै ॥ ज्युं अजियां बिच न्हारोरे ॥ ज्युं जिन मत्तमैं पुज्य भिक्षण जी ॥ पाखंड पोलण हारोरे ॥ कोइ० ॥ २ ॥ घाट घणो पिण शिक्षो पड्यां बिन । कुण झेले हाथ अझारोरे ॥ ज्युं समकित शिक्षो पुज्य दियो जब ॥ चाल्या तीर्थ च्यारोरे ॥ कोइ० ॥ ३ ॥ ज्युं काष्ट की ज्यांझ

चलावै ॥ समुंद्र मांखे फारोरे ॥ शोभ कहै थानै भवसागर थी ॥ श्रीपुज्य उतारै पारोरे ॥ कोई० ॥४॥ पाषंड फूटीज्यारुं सरीखां लेडूवैला लारोरे ॥ असल साध भिखणजी स्वामी ॥ निराधार आधारोरे ॥ कोई० ॥५॥ श्रीपुज्य भिखणजीरी सरधा सुणियां ॥ पडे पाषंड मुवारोरे ॥ चेला चेली खोया कुमत्यां करकरकनियां कारोरे ॥ कोइ० ॥६॥ साध गुणां बिन युंहिज लूंटै ॥ औ परतख पाडे धाडोरे ॥ श्रीपुज्यजी चौडे बतावै ॥ अबतो आंख उघाडोरे ॥ कोई० ॥ ७ ॥ तीर्थंथापीने धर्म चलायो ॥ जाणै बीरनो बारोरे ॥ चौथे आरे बीर प्रगटिया ॥ श्रीपुज्य पंचम आरोरे ॥ कोइ० ॥८॥ ज्योपर भवमै सुख चाहोतो ॥ मानों शोभतणो मनुहारोरे ॥ नहीं मानों तो जोरीदावै ॥ देव पीठ परिहारोरे ॥ कोइ० ॥ ९ ॥

शोभ बचन थी बेमुख हुवोतो ॥ सुत्र अर्थ संभारोरे ॥ इण दृष्टान्ते दुरलभ लाधौ॥ ते नर भवकांइ हारोरे ॥ कोइ० ॥ १० ॥ एक दमडीरी हंडिया लेवैतो ॥ करै प्रिछा च्यारोरे ॥ पिण सत्तगुरुनें पाषंड मत्तरो ॥ पाप्यां काढो नहिं निस्तारोरे ॥ को० ॥११॥ पतिमूवां पछे विधवा हुवै ॥ तेसखै हया सिणगारोरे ॥ ज्यूंमुढपणेमें मग्न भयापिण ॥ नहीं संत सिर दारोरे ॥ कोइ० ॥१२॥ डाकण थइनै कपड़ा नाखे ॥ नलि-हुवे जरख असवारोरे ॥ ज्यु ग्रहस्थनै पाषंडी मिलिया ॥ तेकिम उतरै भवपारोरे ॥ कोइ० ॥ १३ ॥ शोभ कहे में एह सरीखा गुरु ॥ पाप्यांलाख हजारोरे ॥ श्रीपुज्य बिना भव-भवमे पचियो ॥ ज्यु भडभुंजानी भाडोरे ॥ कोइ० ॥१४॥ पाषंड मतमें काल करै तो ॥ जावै नर्क मंझारोरे ॥ परमाधामी देव नर्कमें ॥

देमुद्गरनोमारोरे ॥ कोइ० ॥१५॥ कुणराजाने कुणग्रहपती ॥ चाल्या जन्म बिगाडोरे ॥ काल लपेटा लेय रह्यो छै ॥ अब तो आंख उघाडोरे ॥ कोइ० ॥१६॥ हुंडानासें काल अवसरपणी ॥ महा दुःखमो आरोरे ॥ असल साध ये कठिन कह्यापिण ॥ पमोटा अणगारोरे ॥ कोइ० ॥ १७ ॥ पुज्य पिटारो छेगुण भरियो । ज्युं मोतियनको हारोरे ॥ शोभ कहै श्रीपुज्य बुद्धिको ॥ नहीं खूटै भंडारोरे ॥ कोइ० ॥ १८ ॥ शांशण नायक श्रीपुज्य जी॥ अरिहंतज्युं इण आरोरे ॥ शोभ कहै श्रीपूज्य सरीखो नहीं कोई भर्थसंभारोरे ॥ कोई० ॥ १९ ॥ इति०

अथ ढाल श्वार्थ सिद्ध की बरणनकी ॥

इग्यारैसे जोजनरी महलायत । तेरतना सेती जडियाजी ॥ साध पणो सुध जे नर पाले । त्यांरे पाने पडिया जी ॥ इण स्वार्थ

सिद्दरे चंद्र वै कांइ। मोती झुंबक शोहै जी॥ १॥ तसु झुंबकरै बिचलो मोति॥ चोसट मणारो जाणों जी।। च्यारूं मोती तास पाखतीयां। बतीस २ मणारा बखाणो जी॥ डूण० ॥२॥ तेहनै पाखतीयां अति निर्मल। सोलै २ मणारा आठ मोती जी॥ सुंदरता देखी हियोहर्षै॥ आंखड्ल्यां रहै जोतीजी॥ डूण० ॥३॥ तसुपाखतीयां सोलै मोती॥ त्यामै आठ२ मणारा भारिजी सोभा अधिक बिराजै तेहनी॥ दीठां हर्ष अपारीजी॥ डूण० ॥४॥ बतीस मोती तास पाखतीयां च्यार २मणारा तोलोजी॥ जोवंता तृप्त नही हुवै॥ मोती घणा अमोलो जी॥ डूण० ॥५॥ तास पाखतीयां चोसठ मोती॥ ते दोय २ मणारा तासो जी॥ तेज उद्योत करै तिणठामै॥ त्याछै घणो प्रकासो जी॥ डूण० ॥ ६ ॥ त्यां पासै मोती मण मणारा॥ एक सोनै अठाइसो

जी ॥ भूख तृखा मिटै तस देख्यां ॥ भाष
गया जगदीशोजी ॥ झूण० ॥ ७ ॥ दोयसोनै
तेपन मोती ॥ स्वार्थ शिखरे गिणियां जी ॥
त्रिसला नंदन वीर जनेस्वर केवल ग्यानी
थुंणीयांजी ॥ झूण० ॥ ८ ॥ वायु जोगे मोती
आफलतो ॥ तोहू मोती मूल न फुटैजी ॥
मीठा सब्द गहर गंभीरा । त्यां मोत्यां मै सु
उठे जी ॥ झूण० ॥९॥ ते सदा काल शास्व-
ता मोती ॥ त्यां नै पवन चलावैजी ॥ मधुरा
सब्द त्यां मै सु निसरें ॥ ते सुर नै घणा
सुहावैजी ॥ झूण० ॥ १० ॥ जाणे बतीस
विधि नाटक पडै छै ॥ विविध वाज्यंतर सोहै
जी ॥ छतीस रागणी त्यां मां सु नीकलै ॥
ते सुरना मनडा मोहै जी झूण० ॥ ११ ॥
वूर वनस्पति नै फैल रूडूरो ॥ एसी ओपमां
न्हालीजी ॥ माखण नै रेसम ना लच्छा ॥
तिण स्युं सेज घणी सुंहाली जी ॥ झूण० ॥

१२ ॥ तेतीस हजार बर्ष नीकलियां ॥ भूख तृखा मनस्था थावैजी ॥ सास उसास थी नीचोमूके ॥ पक्ष तेतीसि जावैजी ॥ इण ॥ १३ ॥ अवधि ग्यान सुं नीचो देखै ॥ नर्क सप्तमी हेठै जी ॥ ऊंचो देखै ध्वजा पताका ॥ तिर्छों ठेटो ठेट जी ॥ इण० ॥ १४ ॥ सवार्थ शिद्धना सुख भोगवतां ॥ हर्षे बिसवा बीसो जी ॥ त्यां एक धारा लेह लीन रह्याछै ॥ सुर सागर तेतीशो जी ॥ इण० ॥ १५ ॥ तिण ठामै जे जाय ऊपना ॥ तेसगला एका अवतारो जी ॥ ते देव चवीने मनुष्य जहुवे ॥ मोटा कुल मंभारो जी ॥ इण० ॥ ॥ १६ ॥ साध पणो सुध चोखो पाले ॥ तेइ सडी मह्लायत पावै जी ॥ थोडा दिन मैं करणी करनै ॥ चवनै मुक्त सिधावे जी ॥ इण० ॥ १७ ॥ इति०

॥ स्वामीजी श्री सतमलजी कृत ॥

अथ श्रीडालचंदजी म्हाराज कै गुणां की ढाल ॥

पहलीराग० ॥ अपत्सरा करती आरती जिन आगे। हांरे जिन आगरे प्रभु आगे एदेशी०

डाल गणि नित सेविये सुखकारी। हांरे सुख कारी रे सुखकारी। हारे थांरी मुद्रा मोहन गारी। हांरे थांरी चरण कमल बलिहारी। डालगणि नित सेविये सुखकारी ॥ ए आं० भिक्षु पाटे सप्तमें यश धारी। हां रे यश धारीरे यश धारी। हांरे एहतो साहस जिन अवतारी। हां रे थांरी जगमें कीरत भारी शोभ रह्या चिहुं तीर्थमें सुखकारी ॥ हां रे सुख० ॥ २ ॥ नयर उजेणी दीपती कान की नंदा। हांरे कान की नंदा रे गणि नंदा ॥ हारि थारो आनंद पूनम चंदा। हांरे थाने सेवे सुरनर वृंदा ॥ परतक्ष देवतरु समां सुखकारी ॥ हांरे सुख० ॥ २ ॥ नवकि

जन्म गणिराजनो। तेवीसै संयम धारी।
हांरे संयम धारीरे प्रवज्या धारी॥ हांरे
हुवा पंडितां में सुविचारी। हांरे एहतो
चौपन पट अधिकारी॥ सयल जन कर
रह्या खमां खमां सुखकारी॥ हांरे सुख० ॥
॥ ३ ॥ गुणषट् द्दसिओपता। असठ संपदा
सोहै। हांरे संपदा सोहैरे संपदा सोहै।
हांरे अविपेखित हरषित होवै॥ हांरेगणि
चंद्र चकोरज्युं जोवै। सोहत षोड़स ओपमा
सुखकारी॥ हांरे सुख० ॥४॥ सारकतारक
आपछोगणिधीरा। हांरेगणिधीरारेगणिधीरा०
हांरे तुमसिंधूजेमगंभीरा॥ हांरे मैंतो पाया
अमोलकहीरा॥ गंधहस्तिज्युं पुरषोतमांसुख
कारी॥ हांरेसुख० ॥४॥ दयालगवाल कृपाल
छोगणिमेरा। हांरे गणि मेरारेगणिमेरा०
हांरे मैंतो सरणलिया प्रभुतेरा॥ हांरेमुज
मेटो भवभवफेरा। तुमसम नहीको भर्थमां

सुखकारी ॥ हांरेसुख० ॥६॥ संम्बतउगणीसै चोसठो सरीकारो । हांरेसरीकारोरे सुहा-प्यारो ॥ हांरे द्वितिया कृष्ण सोमवारो । हांरे सत्तामल हर्ष अपारो । गुणगावत महामच्छो-त्सवमां सुखकारो ॥ हांरेसुख० ॥७॥ इति०

अथ ढाल२ दुजी राग० माताजी सभ० दर्शन०एदेशी०हांजीगणी भिक्षुगणीके पाटकै सप्तम सोहताहो स्वाम ॥ हांजी गणी पेखत तुम दीदारकै भवि मन मोहता हो स्वाम ॥ हांजी भवि जपो पूज आनन्द मुंनिंद मनो-हरु हो स्वांम ॥ १ ॥ हांजी गणि सदन बदन छिब छाजतराजत चंद्रमुखी होस्वांम ॥ हांजीगणि तुम तारण मुनि नायके सासण गण अखी हो स्वांम ॥ २ ॥ हांजीगणि गुण षट् त्रींस उदारकै ओपम षट् दस ऊपती हो स्वांम ॥ हांजी गणी बसु संपद बपुधारकै भक्त उद्धारण नित प्रती हो स्वांम ॥ ३ ॥

हांजी गणी वांणी अति सुखकारके सरस अम्रत सहि हो स्वांम ।। हांजी गणि श्रवण सुणत अति प्यारके बहु सुख पावही हो स्वाम ॥ ४ ॥ हांजीगणि तुम गुण अपरम पारके स्वयंभु रमण जेहवाहो स्वांम ।। हांजी गणि किम कहिय लघु बुद्धके अधिक गुण गेहवाहो स्वांम ॥ ५ ॥ हांजीगणि वेद ऋतु ग्रह चंद्र मोष्ट सुक्ला त्रयोदशी हो स्वांम ॥ हांजी गणि सल्लमल गुण गायकै तन मन हियो हुलसी हो स्वांम ।। ६ ॥ इति० ।

अथ ढाल ३ तीसरी राग० घुम घुमालो गाघरो म्हांरो एडीलुलर जावेहो लाल एदेशी ॥ पंचम आरे भर्थ मंझारे प्रगट्यां भिक्षु अवतारी होलाल ॥ न्याय मार्ग सुद्ध बतावि भवि भजन किध निसतारी होलाल । हो जसधारी स्वांमजी । थांरी महिमें महिमां भारी हो लाल ।। हो सुखकारि स्वांमजी । थे तो

तसप्रमपट अति सुन्दर । साहसमांनुजेम पुरंदर । छिवछाजतुहै गणवास्तलकरना । लगरह्यो जियरोहमारो गणिचरणां ॥ वसरह्यो जीयरोहमारो गणिचरणां० ॥ १ ॥ सरद ससांक वदनछिवसोहै । भविजन चन्दचकोर नुंजोवै । वारीजावुंजीसुरतियां है मंनह-रनां ॥ ल० ॥ २ ॥ पांण अखंडन सांसण मंडन ॥ मिथ्याध्वांत हरणजुं मारतंडन ॥ तोरेदिदार निरखेसें शिवपदवरना ॥ ल० ॥३॥ बेताषट्मतविवधयीनाणो रसभाषानां सम-यसुजाणी । तोरावाक्य श्रवणते मिटतभव फिरना ॥ ल० ॥४॥ संवत उगणीसे पेंसठ मासे । तपाश्वेत मुनि आंणहुलासे । सक्त-मल तोरा लिया है सरणा ॥ ल०॥५॥ इति०

अथ ढालः ७ सातमीं राग० कहराय। नांहि सुणग्या मनकी बात कोई म्हेलांको सेवासी० एदेसी० पंचम अर्को प्रगटे भीक्षु

स्वाम । कोई तसुपट सप्तमे राजैजी विराजै पूज परम गुरू । देसमालवो नगर उजैणी ताम ॥ कोई कनईया लालको नंदाहो । मुख चंद्राजेम पुरंदरू ॥१॥ मात जडावां जनम्यो सुत सुखकार । कोई सज्जन मन विकसावे जी । यशछायोजेमजिनंदनो ॥ कोई भवि-जन पेखत गणि तुम दीदार ॥ तनु लोम २ हुलसावैजी । वरध्यावै ध्यान गणिंदनो ॥२॥ हरीयरजिमअति गूंजैडालगणींद । कोई तब कीरत अतिभारीजी । विस्तारी चिहुं तीर्थमे मिथ्यातिम्र विध्वंसण जेमदिनंद । भानूं समक्रांतीथांरीजी । जगजहारीईह भर्थमे ॥ ३ ॥ वागत वांणीगणी अमीय समान । कोई जिम वर्षे सेहश्रान्नजो तिमगणोआखेवाणअपु र्वहो । वंछित् पूर्ण हरीचंद्र समजाण ॥ कोई मेरुतणी पर धीराहो । गंभीरा स्वयंभु रम-णहो ॥ ४ ॥ मधुकर मन चाहत मकरंद ।

कोई गोप्यांकि नंदलालोजी तिमगणी वालो सुज नेछै सही। अहो निस ध्यावत कांनन। गयंद कोई सियाकि रघुरायोजी॥ तिम-गणी मंन भायो दास तुज सर्णहो ॥ ५ ॥ एक रसना करीकिम कहिवाय। कोई अमर पती ज्यो आवेजी गुण गावै सहस्र जिह्वा करी। गुणतो अगणित पारन लंघाय। कोई एहवाछै सुज स्वांमीहो॥ महो नांमीश्रेष्ट गुणांवरी ॥ ६ ॥ ईंद्री रस निधि चंद्रोवदय मांय। कोई प्रथम कृष्ण जेठमासेजी॥ थई हुलासे गणि गुणगावीया। कोई सतमलगणि स्तवन सुणाय। गणि वरना गुण गायाजी। सुखपाया भविमन भावीया ॥ ७ ॥ इति०

॥ स्वांमीजी श्रीकनीरामजी कृत ॥

श्रीडालगणि गुणांकी ढाल०राग० खेलण द्यो गणगोर भंवर मांनेनिर खण देगण गोरजो म्हारिसहियां जोवेवाट भंवर म्हां॥ एदेशी

सातमो पाट भिक्षुगणी कीरोङ्गल कियो उजियार ॥ आण अखंडित सासण मंडित साद्दस जिन अवतार ॥ साद्दस जिन अवतार गणाधिप साद्दस जिन अवतार ॥ जीथांरि महिमां अगम अपार ॥ गणांधिप सांभलतां सुखकार ॥१॥ नयर उजैणी मनोहर बारु कान कुखे अवतार ॥ मात जंडावां रे कुक्ष उपना वरत्या जयर्कार। वरत्या जयर्कार गणांधीप वरत्या जयर् कार ॥ जीथांरो महिमा ॥२॥ नवकी जन्म प्रभु तुम पाया ॥ तेवीसे चर्णधार ॥ चोपन गणपद पाट विराज्या ॥ चहुं तीरथ हितकार ॥ चहुं तिरथ हितकार गणां धिप चहुं तीरथ हितकार ॥ जीथांरो महिमा ॥ ३ ॥ पाट विराज्या सिंह जिम गाज्या देसना अमृतधार ॥ भविजन सुण२नै अति हर्षै पेखत पुज्य दिदार ॥ पेखत पुज्य दिदार गणांधिप पेखत पुज्य दिदार ॥ जी थांरि॥४॥

षोडस श्रोपम श्रोपत सखरि षट् तीस गुणकी धार ॥ अष्ट संपदा सोहत सुंदर सोम मुद्रा श्रीकार ॥ सोम मुद्रा श्रीकार गणांधिप सोम मुद्रा श्रीकार ॥ जीथांरी०॥५॥ अन्तरजामी तुम गुन सिन्धु वंछित फलदातार महेर करिने चर्णांराखो उतारो भवपार। उतारो भवपार गणांधिप उतारो भवपार ॥ जीथारी ॥ ६ ॥ उगणीसै पैंसठ माहा वदि दूज चन्देरी सहर मंझार पाटमहोछवनी छव अतिभारि हर्षंत भवि नरनार ॥ हर्षंतभवी नरनार गणांधिप हर्षंत भवि नरनार ॥ जीथांरि ॥७॥ इति०

॥ महा सतियां श्रीचांदकंवरजी कृत ॥

अथश्री डालचंदजी मांहाराजकी गुणांकी ढाल पहली राग० सोनारो घड़लो रूपारी इंढाणी ॥ लालजी० गूजर पाणीडै जाय ॥ लालजी०एदेशी०भिचुपट उत्तम छाजतांजी। स्वामजी० डालचंद महाराजर। स्वा० भव

दधि तारणा जहाज ॥ स्वा० ॥ दुलहापर श्रवर न श्राज ॥ स्वा० ॥ पूज प्रमेसर थांने घणी खमा ॥ १ ॥ नगर उजेणी सखर सुरंगी ॥ स्वा० कान्ह कुले उतपन ॥ स्वा० मात जड़ावां धन ॥ स्वा० ॥ जेहनोहै पुत्र रत्न ॥ स्वा० घणांरे उजागर थांने घणी खमां ॥ २ ॥ गुण षट् दसने षट् दस श्रोपम ॥ स्वा० ॥ संपद श्रष्ट सनूर ॥ स्वा० ॥ सुर गिर जेम सधीर ॥ स्वा० ॥ निरमल गंगानीर ॥ स्वा० तेज दिवाकर थांने घणी खमां ॥ ३ ॥ रसि मंडल बिच तखत बिराज्या ॥ स्वा० सक्र ज्युराजै ताय॥ स्वा० पेख छटा विकसाय ॥ स्वा० मनु मधुकर लोभाय ॥ स्वा० जग यश धारक थांने घणी खमां ॥४॥ पंचानन श्राक्रम करीहो ॥ स्वा० पाखंड दियारी हटाय ॥ स्वा० पुनवंत भेट्या पाय ॥ स्वा० रह्यो तुज भुज छत्र छांय ॥ स्वा० भगत उधारक थाने

घणी खमां ॥ ५ ॥ सुंदर कोमल मधुर मनो
हर ॥ स्वा० देशना अमृत रूप ॥ स्वा० जे
निसुणै धर चूंप ॥ स्वा० ते न पडै भव कूप
॥ स्वा० ॥ भव सिंधु तारक थांनै घणी खमां
॥६॥ मुज चित तुज चरणा वस्यो छो ॥स्वा०॥
षट् पद पुसप सुगन्ध ॥ स्वा० ॥ ज्युं मोरां
घन वुन्द ॥ स्वा० ॥जेम चकोरा चंद ॥ स्वा०
आज भयो आनन्द ॥ स्वा० वंछित सार
कथांनै घणी खमां ॥ ७ ॥ चिंत्यामणी सम
नाम तुमारो ॥ स्वा० कल्पतरू रंजीवार ॥
स्वा० ॥ आप तणो आधार ॥ स्वा० दीज्यो
पार उतार ॥ स्वा० विरद विचारक थांनै
घणी खमां ॥८॥ संतियां मांहे सखर सिरो
मण ॥ स्वा० जेठाजी यशधार ॥ स्वा० थपि
सुभ दृष्टि उदार ॥ स्वा० धन्य जेहनो श्रव
तार ॥ स्वा० पोस दसमी श्रीकार ॥ स्वा०
पार उतारक थांनै घणीं खमां ॥९॥ इति० ॥

ढाल२ दुसरी राग० आई ए सावन मास सखीरी पवनबाजता सरणाणां ॥ चउ तरफ सुं घटाज उमटी इन्द्र गाजता घननननं ॥ बड़ी रे बुन्द बर्षा रीतु बर्षै बीजली चमकै कननननं ॥ पीउ२ पपइया बोलै भरना भर रह्या भननननं ॥ एदेशी० ॥

पंचमैं अरके प्रगटे भिक्षु मिथ्यातम भ्रम हरणाणां ॥ तिमल अनोपम युगल नाण श्रीजिन आणा शिर धरणाणां ॥ भिक्षु स्वाम तणी हदक्यारी मेरो म्हा सुख करणाणां ॥ आराध्यां भव जलद उद्धरे शिवपुर सुंदर बरणाणां ॥ १ ॥ द्वितिय पाट गुरू माल गणांधिप ॥ नृप ड्रंदु जय सरणाणां ॥ मघवा गणि मनोहर मुद्रा मांणक जनमन हरणाणां ॥ गणि महाराज तणो नित कीजे समरण महा सुख करणाणां ॥ हरण जन्म जरा मरण तणा दुःख ॥ शिव ॥ २ ॥

रसपट ज्यूं गणाधिपराजै ॥ पद मन मधुकर
जपननंनं ॥ सरद शशांक समो मुख सोहै ॥
उदियाचल जिम तपननंनं ॥ डालं गणा-
धिपनो नित लीजै ॥ सरण सदा सुख करण
गणं ॥ हरण कर्म रीपु करण संपदा ॥
शिव ॥ ३ ॥ मदन जिसो मन मोहनी मुद्रा ॥
धरा खिच जिम धरणाणं ॥ सभा सुधर्मी
सक्रतणी पर कीरत छाई घणाणाणं ॥ डांके
गणि सरना नित वाजै जग यश डंका आणां-
णाणां । पेखी रचना समो सरणनी ॥ पाखंड
भाजे भरणाणां ॥ आ० शिव० ॥४॥ तेजुंज
ड्ड ससोतप देखो । कुमति लता गइ फनन-
नंनं ॥ काम क्रोध मद लोभ हटाये खांति इसो
कर धरणाणं ॥ पुज्य प्रमेश्वरके नित
भेटो चरणांबुज दुःख हरनाणं ॥ कल्प
तरु चिंत्या मन पारस आरा ध्यां सुख आन
ननंनं ॥ आ० शिव०।५। सघन पवन वर्षा रितु

बरषै देशन महा सुख करणाणं ॥ सरस्वति कंठे भरणा बिराजै ॥ हर्ष लिहू जन मननननं ॥ डाल गणाधिप नोनित शांभल बयन रयन हित करणाणं ॥ अमृत रूपण अधिक अनोपम ॥ उभय बयण सुख सरणाणां ॥ आ० शिव० ॥ ६ ॥ कोड दीवाली तपो स्वामजी ॥ ए अविलाषा मननननं । सतियां मैं जेठांजी सोहै । घणी मरजीअति घननननं। उगणींसै साठै गुणगाया सहर बीदासर सरणाणं ॥ माघ मोछोत्सव दिन ए नीको रखो मुनिजर नयननं । आ० शिव० ।७॥ इति० ।

अथ ढाल३ तीसरी राग० हम तो गई थी पनियां भरनकूं २॥ मेरा यांहीं रह्यारे ॥ ओढुंपै हांरे ओढुंपै ॥ छिकवा यांहीं रह्या ॥ मेरी भोली नंनद मेरी स्याणी नंनद ॥ ढुंढि आय थाई अछ्यां ढूंढि आय थाई ॥ वि-

छवा० एदेशी ॥ जिनवर ज्युं उद्योत कारन कूं ॥ जिनवर ज्युं उद्योत कारन ॥ मेरा श्वाम छजैरे ॥ गणि डाल छजैरे ॥ गा दीपेहांरे गादीपै ॥ गणपत धजा ज्यूंरे ॥ कीरत छाय रही मगमें धजा ज्युं रे ॥ मेरा गणिनो सुयश मेरा श्वामनो महिमां महकायरई ॥ बाबा विकसाय रही ॥ अछ्या गरणांयरई ॥ मगमें धजा ज्यूंरे ॥१॥ सहंस किरण सम कुमति हरणकुं ॥ सहंस कीरण सम कुमति हरण ॥ मेरा स्वाम तपैरे ॥ गणिराज तपैरे शीतलता ॥ हांरे शीतलता गणपत चन्दा ज्यूरे ॥ सोभा ल्याय रह्या मघमें चंदा ज्युंरे ॥ मेरा गणिनो सुयश ॥ करुणा सिंधुनोपद नित ध्याय रहा ॥ बाबा विकसाय रह्या ॥ अछ्या गुणगायरया मग में चंदा ज्युंरे ॥ सोभाल्याय रह्या जगमें चन्दा ज्यूंरे ॥ २ ॥ पवर विधि व्याख्यान

कारणाकुं २ ॥ छटा जबर बणीरे छिबभारी बणीरे ॥ पेखण कुं हांरे पेखण कुं ॥ गण पत घटा ज्यूंरे ॥ स्वामी गुंज रह्या गणमें घटा ज्यूंरे ॥ गणि बर्षे बचन सुणां हर्षे सुजन ॥ कुमति भूज रह्या ढीला पन्थी धूज रह्या ॥ अछ्या पद पूज रह्या ॥ गणमें घटा ज्युंरे ॥ स्वामी गूंज रह्या गणमें घटा ज्युंरे ॥ ३ ॥ भा[illegible] [illegible] [illegible] भ्रम हरणकुं: २॥ गणि शक्री इत्तारे मानो दक्षी जिसारे ॥ सांसणपे हांरे सांसणपे ॥ गण-पत पिता ज्यूंरे ॥ पृथीपाल रहा गछनेपिता ज्यूंरे ॥ गणि बोलैं सुमत खलता खोड कु-मत ॥ मद गाल रह्या बाबां फेरा टाल रह्या ॥ अछ्या गुण घाल रह्या ॥ गछनें पिता ज्यूंरे ॥ ४ ॥ इति० ।

॥ राय कुंवरजी म्हा सतियां जी कृत ॥

अथ डालचंदजी म्हाराज की गुणांकी

ढाल ॥ राग० उंठ चढ़ीने लग्यो तावड़ो कर छतरीको छांयां मांरा चांद: आपां दोनु मिल चढ़ स्यांजी ॥ मांरा० घणामीजाजी चांदजी वो थांरी सूरत प्यारीजी ॥ मांरा० गुणका सागर चांदजी मांरी ओड़ निभावोजी ॥ एदेशी० ॥

भिक्षु सप्तमे पाट गणाधिप डालगणि यश धारी ॥ मांरा स्वाम०जग हितकारीरे । मारां घणां उजागर स्वामजीरे थांरा दर्शन पाया रे ॥ मांरा गुणका सागर नाथ जीरे ॥ मन हर्ष उमायारे ॥ १ ॥ मात जड़ावां उदर ऊपन्यां कण कुले अवतारी ॥ मांरा० शया उपगारीरे ॥ मांरा जिन मत मंडन स्वामजीरे थांरी सूरत प्यारीरे ॥ मांरा कुमति विहंडन नाथजीरे थांरो महि यश भारीरे ॥ २ ॥ षट्दश ओपम अष्ट संपदा गुण षट् त्रस उधारी ॥ मांरा०कीरत भारीरे ॥ मांरा

सुमति बधारन श्वामजीरे थांरी जाउं बलि
हारीरे ॥ मांरा भविजन तारण नाथजीरे ॥
थांरी छटा सुप्यारीरे ॥ ३ ॥ समव सरण
बिच जिन इन्द्रपर छटामनो हर छाजै ॥
मांरा० सिंह सम गाजैरे ॥ मांरा घणो पर-
तापी स्वामजीरे ॥ देखी पाखंड लाजैरे ॥
मांरा हो बड़भागी नाथ जीरे थांरा डंका
बाजैरे ॥ ४ ॥ चिंत्यामणी सम चिंत्या चूरन
आशा पुरण इन्दा मांरा० करण आधं-
दारे ॥ मांरा दिलका दाता स्वामजीरे
थांरी चाउं सुख सातारे ॥ मांरा हो बड़
भागी नाथजीरे ॥ थांरे चरणां रातारे ॥५॥
इति० ॥

अथ उपदेशकी ढाल ॥ राग० ओभलरे
सीतापति आयो ॥ एदेशी० ओभव रतन
चिन्तामण सरखो ॥ बारु बार न मिलसी
रे ॥ चेत सकै तो चेत जीवड़ला ॥ एइवो

जोग न मिलसीरे ॥ ओभव रतन चिन्ता-
मण सरिखो ॥ एओ॰ ॥ १ ॥ च्यारुं गत
चौरासी गत मै जिहां तुंरुलतो आयोरे ॥
पुन्न जोगे सुपनांरी संपत ॥ मानवरो भव
पायोरे ॥ ओ॰ ॥ २ ॥ बेली थारे बहोला
जीवडला ॥ लहै जिनजी रो नांमोरे ॥ कु
गुरु कुदेव कुधर्म छाडीनै ॥ कीज्यो उत्तम
कामोरे ॥ ओ॰ ॥ ३ ॥ ज्युं ब्राह्मणने चिंता
मण लाधो ॥ पुन्नतणे संजोगोरे ॥ कांकर
साटै रालज दीधो ॥ फेर मिलणरो नहीं
जोगोरे ॥ ओ॰ ॥ ४ ॥ धन साधुजी संयम
पाले ॥ सूधे मारग चालेरे ॥ खरो ज नांणों
गांठे बांधे ॥ खोटी दिष्ट न घालेरे ॥ ओ॰
॥ ५ ॥ एक काल थारो काल गयो हैं एक
काल थारो नेडोरे ॥ तिण बिचमें तुं बैठ्यो
जीवडला ॥ काल आहेड़ी केडोरे ॥ ओ॰
॥६॥ मात पिता त्रिया सुत बन्धव ॥ बहुतें

ममता जोडेरे ॥ यां सेती जीवरी गरज सरेती ॥ साधुजी घर क्यांनै छोडेरे ॥ ओ० ॥ ॥ ७ ॥ मोह मिथ्यात विषय रस छोडी ॥ सम्बर समायक कीजेरे ॥ गुर उपदेश सदा सुखकारी ॥ सुगुरू नो अम्रत पीजेरे ॥ ओ० ॥८॥ ज्युं अंजली मै नीर समावै ॥ खिणर उणों थावैरे ॥ घडीर मैं घडियावल बाजै ॥ थारी खिण लाखीणी जावैरे ॥ ओ० ॥ ९ ॥ संयम मारग सुध कर पालो ॥ शिव रमणी फल होवैरे ॥ मिनखरो भव छै मुक्तिरो कारण ॥ अहलो तो मत खोवैरे ॥ ओ० ॥ १० ॥ कायर नर कादा में पड़सी ॥ सूरा पार उतरसीरे ॥ बाहर भीतर समता राखो ॥ जन्म मरण नहीं करसीरे ॥ ओ० ॥ ११ ॥ देव गुरू धर्म दृढ़ करि सेवो ॥ समगत सुध आराधोरे ॥ छव काय जीवांरी जयणां पालो ॥ सुत्त तणा फल साधोरे ॥

श्रो० ॥ १२ ॥ गुरु कंचन गुरु हीरा जीव-
डला ॥ गुरु ग्यानरा भरियारे ॥ ज्यां गुरु
उपदेश ह्रदयमें धास्यो ॥ अनंत भवे जीव
तिरियारे ॥ स्रो० ॥ १३ ॥ इति० ।

अथ श्री भव जीवांको ढाल वैराग की ॥

राग० ॥ पंचो गोरीरो छोड़ोहो रसिया
वस पड़े । एदेशी० भव जीवां आद जनेश्वर
वीन वु ॥ सत्त गुरु लागुं पाय ॥ भव
जीवां मन वचन काया बस करो ॥ छोड़ो
च्यार कखाय ॥ भव जीवां करणीं हो की
ज्योचित निरमली ॥ एआं० ॥ १ ॥ भव-
जीवां मीनख जमारो दोहेलो ॥ सुन सुंण
भवसार ॥ भ० साची सरधा दोहेली ॥
उत्तम कुल अवतार ॥ भव० ॥ २ ॥ भ०
सिकियो इण संसारमै ॥ भड़भूंजा की
भाड़ ॥ भ० निगरंथ गुरु हेला देवै ॥ भव
तुं आंख उघाड़ ॥ भ० ॥ ३ ॥ भ० मोह

मिथ्यात री नींद मै ॥ सूतो काल अनाद ॥ भ० जन्म मरण बहुला किया ॥ ज्ञान विना नही याद ॥ भ० ॥ ४ ॥ भ० नर्क तणां दुःख दोहेला ॥ सुण तां थर हर थाय ॥ भ० पाप कर्म बहुला कीया ॥ मार अनंती खाय ॥ भव० ॥ ५ ॥ भ० चांद सूर्य सुझ दीषे नहीं ॥ दीषे घोर अंधार ॥ भ० भाजण ने सेरी नहीं ॥ जिहां भाजै जिहां मार ॥ भव० ॥६ ॥ भ० आंधो जीमण रातरो ॥ करतो डरतो नांह ॥ भ० बो भर भाटो तेहनै ॥ चांपै मुखड़ा रै मांह ॥ भव० ॥ ७ ॥ भ० परमां धामीं देवता ॥ ज्यांरी घनरै जात ॥ भ० मार देवे पापी जीवनै ॥ करै अनंती घात ॥ भव० ॥ ८ ॥ भ० अर्थ अनर्थ धन कारणै ॥ जल ढोल्यो विन ज्ञान ॥ भ० बाहेर सुच बहुला किया ॥ भीतर मेल अज्ञान ॥ भव० ॥९॥

भ० वयतरणी नदी लोही राधरी ॥ तिणरो तीखो नीर ॥ भ० तिणमै डबोवै पापी जी- वनै ॥ छिंट २ होय शरीर ॥ भव० ॥१०॥ भ० ढांढै ज्युं चरतो रहतो ॥ गिणतो नहीं तिथ न वार ॥ भ० पान फल रूंख छेदतो ॥ दया न आणीं लिगार ॥ भव० ॥ ११ ॥ भ० विषे तिहां पुले छांवलो ॥ बैठतो तिणरी छांय ॥ भ० पान पड़ै तरवार ज्युं ॥ टूक २ हुय ज्याय ॥ भव० ॥ १२ ॥ भ० पराई छाती दाभतो ॥ चोख्या बहोत ज- माल ॥ भ० धन तो खाधो कुटम्बीयां ॥ मार एकलडो झाल ॥ भव० ॥ १३ ॥ भ० धंधैमै खूतो रहतो ॥ जूतो घरकै बार ॥ भ० लोह तणै रथ जोड़ीयो ॥ धर ताता अंगार ॥ भ० ॥ १४ ॥ भ० हाथ पांव छेदन करै ॥ नाखै अंग मरोड़ ॥ भ० तिण जायगां आय जपनो ॥ नहीछै

किणारो जोर ॥ भव० ॥ १५ ॥ भ० पाप कर्म बहुला किया ॥ कर २ मनरो जोस ॥ भ० बोलै परमां धामीं देवता ॥ किसो हमारो दोस ॥ भ० ॥ १६ ॥ भ० रंग रातो मातो फिरतो ॥ पर नार्यां रै संग ॥ भ० अग्न बलती लोह पूतली ॥ चाढ़े तिणरै अंग ॥ भव० ॥१७॥ भ० खिण जीतब सुखरै कारणै ॥ सागर पलांरो मार ॥ भ० बिन भुगत्यां छूटे नहीं ॥ अरज करुं बारु बार ॥ भव० ॥ १८ ॥ भ० क्रोधमान माया लोभमे ॥ छकियो घोर अथाय ॥ भ० साध श्रावक दीषे नहीं ॥ देतो धर्म अन्तराय ॥ भव० ॥ १९ ॥ भ० जीव हणे धर्म जाणनै ॥ सेव्या कुगुरु कुदेव ॥ भ० निग्रन्थ गुरसेव्या नहीं ॥ राखी कुलकी टेव ॥ भ० ॥ २० ॥ भ० मूये गयेनै भूख्यो घणों ॥ लीयर पाछलो रात ॥ भ० ॥

अथ श्री मंद्रजी स्वामीरो सत्वन राग० हुई सुवै नीकस गये तारा मुज छाड चले बनजारा ॥ एदेशी० श्रीमंद्र स्वाम तुमारा। मोय दरसण प्राण अधारा। एआंकडी स्वारथ सिंडूथकी चव आया ॥ सत्तकार दे कूखे जायारे ॥ श्रीयांश नृप सुखकारा ॥ मो० ॥१॥ सुर इन्दर मंगल गावे ॥ सुणभवि-जन मन हरखावेरे ॥ महोत्सवके अंत न पारा ॥ मो० ॥ २ ॥ नारी रूकमणी परणी वहु शील गुणें मन हरणीरे ॥ शशि सूर्य तेज झिलकारा ॥ मो० ३ ॥ संसार सुख जाणि खारा ॥ प्रभु लीधो संयम भारारे ॥ प्रभु गुण कर ज्ञान भंडारा ॥ मो० ॥ ४ ॥ अतिसय च्यार ने तीसो ॥ वाणी भल पैंती-सोरे ॥ जिम घन वर्षे जल धारा ॥ मो० ॥ ५ ॥ स्फटिक सिंहासण छाजे ॥ प्रभु मेघ तणी पर गाजेरे ॥ पाखंडकी पोलन

हारा ॥ मो० ॥ ६ ॥ कंचन बर्णी काया ॥ भल कैवल पदवी पायारे ॥ प्रभु च्यार कर्म जड जारा ॥ मो० ॥ ७ ॥ आयु पूरब लाख चोरासी ॥ प्रभु मुक्त पुरी ना बासीरे ॥ श्रीजिन० सांसण सिरदारा ॥ मो० ॥ ८ ॥ तुज सेवै घणां नरनारी ॥ नित प्रति उठ सांज स्वारीरे ॥ भल ध्यांन धरे सहु थांरा ॥ मो० ॥९॥ संवत् उगणींसे पैंसठ ॥ सावण माश सरे सटरे ॥ चवदस तिथि मंगल-वारा ॥ मो० ॥१०॥ कनीराम गुण गाया ॥ प्रभु सरण तुमारी आयारे ॥ मेरे भव दुःख भंजो सारा ॥ मो० ॥ ११ ॥ इति ।

अथ श्री डालचंदजी म्हाराजके गुणांकी ढाल० राग० ठेठरकी० देशी० तन मन धन कहू तोपे वारीयां ॥ तन मन । एआंकडी डालचंदगण इन्द दिमंद सम ॥ चर्ण कमल बलिहारीयां ॥ तन मन ॥ १ ॥ श्रवन वेदन

तन अप्रसन मन घन ॥ निरखन चित दीदारीयां ॥ तन ॥ २ ॥ रहिन सक्यो दर-शन विन पायें ॥ तव इहां आय जुहांरीयां ॥ तन ॥ ३ ॥ तत खन कनै आय दरिशन पायो ॥ देख अचरिज अधिक कसारीयां ॥ तन ॥ ४ ॥ पूरण महैर कारी सुज उपर ॥ टुकैक निजर निहारीयां ॥ तन ॥ ५ ॥ सम चित वेदन सहन सही सम ॥ दिलमैं धीरज धारीयां ॥ तन ॥ ६ ॥ मन वलियो वलवंत न दूजो ॥ तुम सम भर्थ संभारीयां ॥ तन ॥ ७ ॥ असुभ दैत्य अघ चूरण कारण ॥ सांन्त वज्रकर धारीयां ॥ तन ॥ ८ ॥ थासे सुख साता अव जलदी ॥ चिहुं तीरथ भाग्य सुसारीयां ॥ तन ॥ ९ ॥ गुलावचंद सुखमैं सुख नहिसे ॥ जयपुर सहर पधारीयां ॥ तन ॥ १० ॥ उगणीसै छासठ श्रावण मैं ॥ लाडणों हर्ष अपारीयां ॥ ११ ॥ इति० ॥

अथ श्री पुज्य परमेश्वरजी श्रीकालुराम जी महाराजके गुणांकी ढाल १ पहली ॥ राग० सरणाटै कुचामण बहग्यो ॥ मांरै मारूजी रो बंगलो रहग्यो जी ॥ सर० वा: बलदेव दुसाले वाला ॥ एदेशी० कालुराम गणिन्द गणधारी ॥ थांरी सूरत लागै प्यारी जी ॥ कालु० थांरी मुद्रा मोहन गारीजी कालु० ऐश्रां० भिक्षु भारी माल नृपचंदा ॥ जय यश मघ मांणिक मुनिंदा जी। कालु० ॥ १ ॥ सप्तम पट डाल सोभायो ॥ बांसां सण खूब दीपायोजी ॥ कालु० ॥२॥ अष्टम पट कालु छाजै ॥ थांरा महि यश डंका बाजैजी ॥ कालु० ॥ ३ ॥ गणिछापुर सहर मंझारी ॥ लियो ओशवंश अवतारी जी ॥ कालु० ॥४॥ मूलेस कुले अवतंसा ॥ कोठारी गीत सुवंशाजी ॥ कालु० ॥ ५ ॥ शतिमाल छोगांजी थांरी ॥ ते तीसे कुक्ष उजारीजी ।

कालु० ॥ ६ ॥ वय एकादश वर्ष धारी ॥
चारित्र लेवण हुया त्यारीजी ॥ कालु० ७॥
माता सुत एकज साथे ॥ दिक्षाणी मघवा
गणि हाथेजी ॥ कालु० ॥ ८ ॥ वेद वेद
सम्वत शुभकारी ॥ बीदासर सहर मंझारी
जी ॥ कालु० ॥ ९ ॥ मघवा मांणक सिख
धारी ॥ तस सेव करी धर प्यारी जी ॥
कालु० ॥ १० ॥ दिन२ गुण वधत सवायो ॥
डालम गणिके मन भायो जी ॥ कालु० ॥
॥ ११ ॥ वहु सास्त्र सीख हुया जाणों ॥
व्याकरण चन्द्रिका पिछाणों जी ॥ कालु०
॥ १२ ॥ छासठ संवत शुभ कारी ॥
थया युग पदना अधिकारी जी ॥ कालु० ॥
१३ ॥ सावन वद एकम नाम लिखायो ॥
कागज पूठे मे रखवायो जी ॥ कालु० ॥
१४ ॥ भाद्रव शुद तेरस शुभ वेला ॥ थया
च्यार तीर्थं सहु भेला जी ॥ कालु० ॥ १५ ॥

जश नाम प्रगट भयो थांरो ॥ सहु जय २ सब्द उचाख्योजी ॥ कालु० ॥ १६ ॥ सुद पूनम बहु रंगरेला ॥ थया पट महोत्सव ना मेला जी ॥ कालु० ॥ १७ ॥ गणि गुण षट्‌वीस उदारी ॥ ओपमषोड़स सुविचारी जी ॥ कालु० ॥ १८ ॥ थांरी अष्ट सम्पदा सोहै ॥ पेखत भवि जन मन मोहै जी ॥ ॥ कालु ॥ १९ ॥ जोरावर सर्ण तिहारै ॥ थांरो बधो सुयश महिसारै जी ॥ कालु० ॥ ॥ २० ॥ आशन शुद्द बेद कहाया ॥ थांरा गुण कलकत्तामें गाया जी ॥ कालु० ॥ २१

अथ ढाल २ दुजी० राग जलै मारूके गीतनी देशी० ॥

श्री श्री कालुराम गणिंद गणधारी जी ॥ म्हांरा गण सिणगार ॥ थांरी सूरत मुद्रा पेखत लागे प्यारी जी ॥ म्हाराज० एआं० ॥

पुजजी आप० भिक्षु गणिंद रे ॥ अष्टम पट
अति छाजै जी ॥ म्हां० ॥ थांरी समो सरण
विच ॥ देशन सिंह सम गाजे जी ॥ म्हां०
श्री श्री ॥ १ ॥ पु० सुत्र सिधंतकि भेद
भिनो २ भाषे जी ॥ म्हां० भवि श्रवण
सुणीने प्रेम शुधामृतचाखै जी ॥ म्हां० श्री
श्री ॥ २ ॥ पु० देवा री देव ज्युं विचरी
भर्थ मंझारे जी ॥ म्हां० थांरो यश लच्छी
फैली देश विदेशमें सारे जी ॥ म्हां० श्री श्री
॥ ३ ॥ पु० धरा उपरे होवो घणा वड़
नामी जी ॥ म्हां० म्हांरा एह मनोरथ लग
रह्या अन्तरजामी जी ॥ म्हां० श्री श्री ॥४॥
पुज जी थांरी-सोहनी सूरत वसरही मुज
हिय मांयोंजी ॥ म्हां० थांरो भू पर वध ज्यो
दिन २ तेज सवायोजी ॥ म्हा० श्री श्री ॥ ५॥
पुजजी थांरा संत सत्या सूं सासण खिल
रह्यो सारोजी ॥ म्हां० थांरी गादी अचल

रहो जब लग ध्रुव तारोजी ॥ म्हां० श्री
श्री ॥६॥ पुजजी आप कृपा करके वीनतडी
अब धारोजी ॥ म्हां० थांरो आवतको चौ-
मासो सुज सहर मंझारो जी ॥ म्हां० श्री
श्री ॥ ७ ॥ चौमासाकी श्रीमुख सुं फरमावो
जी ॥ म्हां० थांरो जोरावर है दाश आश
पूरावो जी ॥ म्हां० श्री श्री ॥ ८ ॥ पुजजी
थांरा गुण अगणित है मोमति किम कहायेजी
॥ म्हां० आशन शुद एकम प्रेम धरीने
गायेजी ॥ म्हां० श्रीश्री ॥ ९ ॥ इति०-।

अथ ढाल ३ तीसरी राग सारङ्ग ।

मोय नीको लागै सूरत तिहारी ॥
अष्टमें पूजकी जाउं बलिहारी ॥ मोय०
एआं० भिक्षु गणिंदके वसु पट राजत ॥
कालुराम गणिंद गणधारी ॥ मोय० ॥ १ ॥
छोगांजी मात मूलेसको नन्दन ॥ ओस वंश
अवतारी ॥ मोय० ॥ २ ॥ सोहनी सूरत

मोहनी मूरत ॥ सौम्य मुद्रा सुखकारी ॥ मोय० ॥ ३ ॥ तखत वीराजे छटा अति सोहै ॥ दीपत तेज दिनारी ॥ मोय० ॥ ४ ॥ वैठ सभा विच देवो देशना ॥ वाक्य घटा वरसारी ॥ मोय० ॥ ५ ॥ श्रवण सुणत भवि जीव आनंद मन ॥ रोम २ हुलसारी ॥ मोय० ॥ ६ ॥ घन वुंदन कों चातक चाहत ॥ तोय चाहत नरनारी ॥ मोय० ॥ ७ ॥ जोरावर तोसुं अरज करत है ॥ मानो अरज हमारी ॥ मोय० ॥ ८ ॥ शुद ग्यारस गुण गावत तनमन ॥ मृगसर मास संझारी ॥ मोय० ॥ ९ ॥ इति० ॥

अथढाल ४ चौथी, राग० माढ ॥ म्हांरे ढोले छाई वीकानेर ॥ एदेशी० म्हांने प्यारा लागे स्वामी कालुराम ॥ म्हानै वाल्हा लागे स्वामी कालुराम ॥ हांनो थांरो जपन करुं आठोंयाम ॥ म्हा० एआं० पंचमें आरे

देव जिनेन्द्रसा ॥ प्रगटे भर्थमें भान ॥ भिक्षु गणिंद्रके अष्टम पाटे ॥ जिम उदिया चल भान ॥ म्हारराजां आप जिम उदिया चल भान ॥ म्हा० ॥ १ ॥ शभा सुधर्मी इन्द्रतणी पर पामत शोभ असाम ॥ जिम मुनिगणमें आप तणी छवि॥ नीकी लागै ताम ॥ आछी छविनीकी लागै ताम ॥ म्हां० ॥ २ ॥ भवि जन सेवा सारै आपकी ॥ कवड़ी लगै न छदांम ॥ प्रात उठी थांरा दर्शन पावै ॥ ज्यांरा कटज्यावै पाप तमांम ॥ हांजी वांरा कट ज्यावै पाप तमांम ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ तुज चरणोंमें रम रह्या तै॥ नित गावै गुण ग्राम ॥ गावत २ कर्म खपावै ॥ पावे अविचल धाम ॥ हांजी वैतो पावै अविचल धाम ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ गोप्यांके मन कान्ह बसत नित ॥ सीयाके मन रांम ॥ जिममुज मनमें बसरह्याजी ॥ म्हांरो सारो वंछित काम ॥

म्हाराजा म्हांरो सारो वंछित काम ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ हाथ जोड़ अरजी करु'जी स्वामी ॥ नमन करु' सिर नांम ॥ कृपाकर मुज नग्र-पधारो ॥ म्हांरी अधिक वधारो मांम ॥ म्हा-राजा म्हांरी अधिक वधारो मांम ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ सडसठ चैत शुक्लपक्ष वारस ॥ काल-कत्तो शुभठांम ॥ जोरावर पभणत यशथांरा ॥ सफल भई मुजहांम ॥ म्हाराजा म्हांरी सफल भई छै हांम ॥ म्हां० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ ढाल ५ पांचमी० राग० कहरवा ॥

मोय प्यारा जो लगता मोर मुकट वंसी-हारा ॥ मोय० एदेशी० मोय प्यारी ज्यो लगती ॥ प्यारी ज्यो लगती मोय प्यारी ज्यो लगती ॥ स्वाम सासन फुलवारी ॥ मोय० एआं० इन बाडीका धणी जनेश्वर ॥ श्रीवद्ध-मांन उद्धारी ॥ मोय ॥ १ ॥ भिक्षु भारी माल रायगणि सींची ॥ जय जश कर्ण

सुधारी ॥ मोय ॥ २ ॥ मघ मुनि माणक
लाल डाल शशी ॥ दिन२ अधिक उजारी ॥
मो० ॥ ३ ॥ अब डून वाडीके अधिपति
सोहत ॥ कालुराम गणधारी ॥ मोय० ॥४॥
शीतल शरद शशांक वदन छवि ॥ मुद्रा
मोहन गारी ॥ मोय० ॥ ५ ॥ धीर वीर
गम्भीर गणाधिप ॥ तप रह्यो तेज दिनारी ॥
मोय० ॥ ६ ॥ इण वाड़ीमें सुर तरू जैसा ॥
सन्त श्रावक अति भारी ॥ मोय० ॥ ७ ॥
काम लता सम समणी है गहरी ॥ श्राविका
जिम गुल क्यारी ॥ मोय ॥ ८ ॥ समकित
चरण पुष्प बहु फूले ॥ फल शिव पद सुख-
कारी ॥ मोय० ॥ ९ ॥ सुयश सुगन्ध फैल्यो
टहुं लोकी ॥ सुण भवि भ्रमर लुभारी ॥
मोय० ॥१०॥ इण सासणमें क्रीड़ा करन्ता ॥
पामैं आनन्द कारी ॥ मोय० ॥ ११ ॥
जोरावर तोरा गुण गावत ॥ प्रगट्यो हर्ष-

सपारी ॥ मोय० ॥ १२ ॥ सड़सठ चैत शुक्ल एकम दिन ॥ कलकत्ता शहर मझारी ॥ मोय० ॥ १३ ॥ इति ॥

अथ ढाल ६ छठी गुरू म्हाराज पधारे जब लुगायांकि गावनकी ॥ राग० ॥

मेरी सहीयां हे आज म्हांरो लालन आवे लोए ॥ एदेशी० ॥ संत सत्यांनां वृंद सुं ॥ परवरीया गुण धार ॥ वीर जिनदसा दीपता ॥ हिवडां अर्थ संभार ॥ म्हांरी सहियां हे आज म्हांरा पूज पधारीयाहे ॥ म्हांरो धन्न दिन आयो ॥ म्हांरो पुन्न प्रगटायो ॥ म्हांरो हियो हुलसायो ॥ म्हांरी० ॥ १ ॥ एआ० ॥ आज नगर रलिया मणों ॥ आज भलो दिन वार ॥ आज कृतार्थ सहु थया ॥ पेखत गुरू दिदार ॥ म्हांरी ॥ २ ॥ दर्शन कीधा प्रेमसुं ॥ लुल२ शीस लुलाय ॥ पुज्य कमल पद भेटीया ॥ पातिक

दूर पुलाय ॥ म्हांरो ॥ ३ ॥ बहोत दिनोंकी आश थी ॥ से पूरण थई आज ॥ आनन्द अङ्ग मावै नहीं ॥ सरिया वञ्छित काज ॥ म्हांरो० ॥ ४ ॥ सुखे विराजो स्वामजी ॥ करो घणां उपगार ॥ सिंह निसा गूंजो मही ॥ विनति करां वारूंवार ॥ म्हांरो ॥५॥

॥ इति ॥

अथ ढाल ७ सातमी गुरू म्हाराज विहार करै जब लुगांयांकि गावनकी ॥ राग बागां जाज्यो पिवजी थे निम्बु ल्याज्यो ल्यारजी ॥ एह गीतनी देशी० ॥ भिक्षण जीरा चेला दर्शन वेगा २ दिज्योजी ॥ दीनतड़ी अब धारी म्हां पर किरपा कीज्यो जी ॥ एआं० ॥ आदनाथ आदे प्रवर ज्युं ॥ भिक्षुइण पंचम आरो जी ॥ मिथ्या तिम्र विडार ॥ भान ज्युं कियो उजारो जी ॥ भि० ॥ १ ॥ मारग सुद्ध चलायो तिणने ॥

दिन २ घणो दिपावोजी ॥ भविजीवां नै तारी ॥ भवसें पार पमावोजी ॥ भि० ॥ २ ॥ बोध बीज आपो बहु जननै ॥ भिन २ रहैस सुणावोजी ॥ खलता खोड़ मिटाय ॥ अभय पद जलदी द्यावोजी ॥ भि० ॥ ३ ॥ सुखे २ विचरो महि ऊपर ॥ करो घणां उपगारो जी ॥ शुभ दृष्टि सुं याद करी ॥ म्हांरी लिज्यो बेग संभारो जी ॥ भि० ॥४॥ श्रावक श्राविका तन मन धन कर ॥ हित चितसें गुण गावै जी ॥ लटक २ लटका करै ॥ थांरी मरजी चावै जी ॥ भि० ॥५॥

॥ इति ॥

अथ श्री१०८ श्रीगणेशलालजी स्वामी नै गुणांकी ढाल० राग० सोरठ ॥ गजानंद ध्याउं ऊठ सवेरे ॥ सैंतो चरन कमल हुं तेरे ॥ गजा० एआं० गांव सवाई माधोपुर है ॥ सुत शिव लाल जी केरे ॥ गजा०

॥ १ ॥ मात वरजु जीहो उद्रवपना ॥ पोर वाल वंस लेरे ॥ गजा० ॥ २ ॥ उगणी सै सत्ताइस वर्षे ॥ उर वैराग्य धरेरे ॥ गजा० ॥ ३ ॥ हीरालालजी स्वाम समीपें ॥ दिक्षा व्रतं गहेरे ॥ गजा० ॥ ४ ॥ जय मघ मांणक लाल डाल गणि ॥ सब ही की सेवकरेरे ॥ गजा० ॥ ५ ॥ कालुराम गणाधिपकी अब ॥ शांपर महेर घनेरे ॥ गजा० ॥ ६ ॥ नीत निरमल शुद्ध संयम पालो ॥ शिर गुरु आणा धरेरे ॥ गजा० ॥ ७ ॥ वास वेला तेला इत्यादिक ॥ बहु विध तप्प तपेरे ॥ गजा० ॥ ८ ॥ मुज उपर क्रपा अति कीनो बहु विध ज्ञान दियेरे ॥ गजा० ॥ ९ ॥ तुम प्रसाद एह सांसन पायो ॥ दिन २ रंग बढेरे ॥ गजा० ॥ १० ॥ हाथ जोड़ कर करु वीनती ॥ रखो सु निजर घणेरे ॥ गजा० ॥ ११ ॥ सड़सठ साल वैसाख क्रष्ण पक्ष ॥

अष्टमी तिथ रूडेरे ॥ गजा० ॥ १२ ॥ जोरा वर तोरा गुण गावै ॥ कलकत्ता सहर मंझेरे ॥ गजा० ॥ १३ ॥ इति० ॥

ढाल राग भटीयांणीकी देशी । बसु पट पेथट छाजे हो ॥ बीराजे बीरजिन्द ज्यु ॥ हो दु:क्म पञ्चमे आर ॥ गणींवर दीनदयालु हो ॥ कृपालु कालु स्वामजी ॥ हो जनक जेम आधार ॥ खमां घणी गण इन्दु हो ॥ गुण सींधुराज खमां घणी ॥ एआं ॥ १ ॥ सुमत गुप्त व्रत पालक हो कांई धारक दस विध धर्म्मना ॥ हो बारक च्यार कषाय ॥ जिन धर्म्म जोत जगावा हो ॥ सुरी दीपक साचो सुन्दरु ॥ दिधो सासण कलस चढ़ाय ॥ खमा० ॥ २ ॥ अति सैय तेज दिनन्दा हो ॥ जिन इदा पंकज नीपरे ॥ हो निरख २ हरषाय ॥ गुघु सम दुःख पावे हो ॥ मुरझावे पाषंड पापिया ॥ हो

तसकर जेम लुकाय ॥ खमा० ॥ ३ ॥ सकर सभावत सोहै हो ॥ मन मोहै सुरपति साहेबो ॥ हो देव ज्युं मुनी स्येवंत ॥ ग्यान घटा दरसावे हो ॥ झड़ ल्यावे उप सम नीर थी ॥ हो क्यारी गण सींचंत ॥ खमा ॥ ॥ ४ ॥ काव्यकोस नयै युगती हो ॥ वरगद पद छंद स्वरे करी ॥ हो भाषित भिन २ भेद ॥ स्वय अनुमति प्रती बुजे हो ॥ तसु सुजे शिव मग सांभलो ॥ हो ज्युं ब्रह्मा मुख बेद ॥ खमा० ॥ ५ ॥ पर उपगारी भारी हो ॥ सोदागर हित सिख आपनै ॥ हो सांती सुधा रस पाय ॥ सिंधु सतवत बारु हो ॥ जस चारु महियल विसतस्यो ॥ महि रसना केम कुहाय ॥ खमा ॥ ६ ॥ भव अरणव ए तरणव हो ॥ तव न्नरणव सफरी न्याव ज्युं ॥ हो बरणव शिव पुर राज ॥ जग वछल जस धामी हो सिरनामी स्वामी

मैं करूं ॥ हो अरज सुणो सिरताज ॥ खमा ॥ ७ ॥ कह कर जोड़ि मोड़ी हो ॥ मन किंकर यां कदमां तणों ॥ प्रभु दीज्यो लाज निभाय ॥ उभय भवे सुख पाऊं हो सुभ दृष्टि चांहुं नाथरी ॥ हो मांगूं गोद बिछाय ॥ खमा ॥ ८ ॥ आज भलो रवि आयोहो ॥ मै दर्शण पायो देवरों ॥ हो जन्म क्रतार्थ थाय ॥ ऋषि जयैचन्द्र प्रकासे हो ॥ रितु राग अभद बिद क्षग सरे ॥ हो चतुरदसी चित चाय ॥ खमा ॥ ९ ॥

इति० ॥

ढाल लिखते० वीर जिनेश्वर शुणज्योमोरी वीनती एदेशी ॥ म्हारेहर्ष वधावो क्षापुर सैहरमा ॥ कोई घर घर मङ्गलाचार ॥ उमङ्गो समुद्र श्रावण भाद्रवे ॥ कोई हर्ष रया नर नार ॥ म्हारे ॥ एआं ॥ १ ॥ मूलचंद कुलमें सूरज जगीयो । कोइ मैटणतीमर अंधार ॥ मात छोंगां जो मन हर्षो घणो ॥ कोइ निरखो सुत दीदार ॥ म्हारे ॥ २ ॥ सात कोठारी कुलमें दीपता ॥ कोई चन्द्रन सुरभी दूध ॥

पुर्ष बतीसां लच्चण आगला ॥ कोई गुणछट्तीसुं शुध ॥ म्हारे ॥ ३ ॥ नांव कालुजी अधीको ओपतो ॥ कोई स्याम वर्ण सुख कंद ॥ धर्म्म उपदेश देई भविन्यारता ॥ कोई संप्रति नेमजिनंन्द ॥ म्हारे ॥ ४ ॥ सुत्र सिद्धांत ख्यांत करी बांचता ॥ कोई भिन भिन भेद बखाण ॥ दान दयानें सुनि पतछाणन ॥ ॥ कोई तारे जीव अयाण ॥ म्हारे ॥ ५ ॥ वाक्य छटा घटा भड़ ओसरें ॥ कोई जलधारा असमान तिम सुण २ सारङ्ग जन जिवडा ॥ कोई हघाने अम्रत पान ॥ म्हारे ॥ ६ ॥ च्यार तिर्थं मैगणपत ओपता ॥ कोई जिमतारां विच चंद ॥ मुखडो मलियागर शीतल सोहंतो ॥ कोई अंतर तमनिकंद ॥ म्हारे ॥ ७ ॥ चिंत्या चूर्ण चिन्तामण सारखा ॥ कोई कल्पतरू दातार ॥ वंच्छीत पूरण भूरण पाप नें ॥ कोई सब जीवां आधार ॥ म्हारे ॥ ८ ॥ कनक वर्ण तन सुन्दरता घणी ॥ कोई मुद्रता पंडूर ॥ छाई चमाई जग. जशवेलडी ॥ कोई बध रयो पुन्य अंकूर ॥ म्हारे ॥ ९ ॥ घाट बौषम वट बच्चोभड रयो ॥ कोइ कर द्यो खेवो पार ॥ सरणे आयांरी लज्या राखज्यो ॥ कोई थारोही आधार ॥ म्हारे ॥ १० ॥ सम्वत १९६६ पौष मैं ॥ कोइ क्रष्ण टतीय बुधवार ॥ अर्ज हजारी करजोड़ी कहै ॥ कोई कलकत्ता सहर मंजार ॥ म्हारे ११ ॥ इति० ॥

सूचीपत्र वा आगेसें सुभीता।

श्रीरूपसैन कुमारनो चरित्र पक्का जिल्द सहीत कीमत १।) डाक महसूल अलग।

श्रीजैन भजन प्रकास प्रथम भाग कीमत ॥/) डाक महसूल /)

श्रीजैन भजन प्रकास द्वितीय वा तृतीय भागका कीमत आगे ॥/) आना छा तका अवसुं कीमत ।/) आना डाक महसूल /) आना।

श्रीसालभद्रजी सेठनो शलोको वा श्री नेमीनाथजी भगवाननो नव रसो अगाडी कीमत ।) आना छा अवसुं =) आना रखा है डाक महसूल अलग।

शुभम भवतु॰

प्रस्तावना ।

इस किताबमें श्रीतीर्थंकर भगवान वा बीस विहर मगा वा श्री १००८ श्री स्वामी भिक्षणजी वा मांणकलालजी वा डालचन्द जी वा नये गद्दीधर महाराज धिराज श्री कालुरामजी महाराजके गुणांका स्तवन वा उपदेसकी ढालां ओर भी मोकलो संग्रह करके सर्व जैनी भाइयोंकि बांचना हितार्थ बनाय कर छपाव्या छै इस किताबको जयणां पूर्वक भणाने गुणाने मैं ल्यावे ओर अपनो लाभ उठावैं ।

मिलनेका ठिकाना ।

भैरुंदान जोरावरमल बैयद

मु० रतनगढ़ ।

नं० १४ मुंगापट्टी बड़ाबजार कलकत्ता ।